प्रस्तावना.



आ ग्रंथनी प्रथमावृत्ति संवत १९४० नी सालमां छपाची हती, ते टूंक मुदतमां खपी गइ हती. त्यार पछी तेनी बीजी आवृत्ति गुजराती लीपिमां संवत १९५१ नी सालमां छपावी हती, ते पण पूर्ण थइ छे. हालमां घणा गृहस्थो तरफथी ते बुक शास्त्री लीपि मां छपाववानी सूचना थवाथी आ त्रीजी आवृत्ति शास्त्री लीपिमां छपावी छे.

प्रथमावृत्ति करतां आ त्रीजी आवृत्तिमां दररोज वांचवामां नहि आवतुं श्रीमहावीरस्वामीनुं टूंक च रित्र अने श्रीदशवैकालिकसूत्रनुं चोथुं अध्ययन ए बे विषयो कमी कर्या छे.

ग्राहको, आप जाणता तो हशो के, मुंबईना नि र्णयसागर छापखानामां अमदावाद करतां छपामणी नो भाव घमणो बेसे छे, तो ते प्रमाणे घमणो भाव आपी आ त्रीजी आवृत्ति उपरना छापखानामां छ पावी छे; छतां पण प्रथमावृत्ति करतां बे आना किम्म त ओछी करी मात्र चार आना ज किम्मत राखी छे.

आ त्रीजी आवृत्ति बनती रीते पूर्ण कालजी रा खीने सुधारी छे, छतां कोइ ठेकाणे अशुद्ध जणाय तो पंडित पुरुषो सुधारीने वांचशो एवी आशा छे.

किं बहुना!

लि. शा. क. गो.

ॐ असिआउसाय नमः

श्री

महावीरस्तुति विगेरे.

तत्र प्रथम मंगलाचरण रूप नमस्कार मंत्र प्रारंभः

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं. नमो लोए सव्व साहूणं.

अत्र द्वीतियांग श्री सूयगडांग सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधनुं वीरस्तुति नामे छठुं अध्ययन मूल, अर्थ, भावार्थ अने कथाओ सहित प्रारंभिये छीए.

(काव्यम्.)

पुच्छिस्सुणं समणा माहणा य,
आगारिणोया परतित्थिया य ॥
से केइणेगंत–हियधम्ममाहु,
अणेलिसं साहुसमिक्खयाए ॥ १ ॥

अर्थः—श्री सुधर्मस्वामी प्रत्ये, जंबूस्वामीए आ प्रकारे पूछ्युं के, हे भगवन्! (समणा के०) श्रमणो (माहणा के०) ब्राह्मणो (य के०) वली (आगारिणो

या के०) गृहस्थो (य के०) अने (परतिथिया के०)
परतीर्थियो; ए सर्वे मने (पुछिस्सुणं के०) पूछे छे के
(से के०) ते (एगंत के०) एकांत (हिय के०) हि
कारक, तथा (अणेलिसं के०) एना जेवो बीजो क
छे नहि एवो, जे (धम्मं के०) धर्म, ते (साहुस
याए के०) साधुसमिक्खाए एटले यथास्थित तत्त्व
ने करी (केइण के०) कोणे (आहु के०) कह्यो छे?॥

भावार्थः–पांचमा गणधर श्री सुधर्मस्वामी प्र
जंबूस्वामीए आ प्रकारे पूछ्युं के, हे भगवन् ! स
मुनिराजो, ब्रह्मचर्यादि अनुष्ठान करनारा ब्राह्मण
क्षत्रियादिक गृहस्थो अने शाक्यादिक (तापसादि
अन्यतीर्थियो, ए सर्वे मने पूछे छे के, ते एकांत हि
कारक, एना जेवो बीजो कोइ छे नहि एवो अने
गतिमां पडता जीवोने धरी राखे एवो धर्म, यथा
त तत्त्वज्ञाने अथवा समतावे करी कोणे कह्यो छे

ते धर्म श्री महावीरदेवे कह्यो छे, परंतु ते महावीरस्वा
ना गुणो केवा हता ? ते संबंधी जंबूस्वामी पृच्छा करे

कहं च नाणं कहं दंसणं से,
सीलं कहं नायसुयस्स आसी ॥

जाणासिणं भिक्खु जहातहेणं,
अहासुयं बूहि जहाणिसंतं ॥ २ ॥

अर्थः-(से के०) ते (नायसुयस्स के०) ज्ञातपुत्र
श्री महावीर देवनुं (नाणं के०) ज्ञान (कहं के०)
कयुं (आसी के०) हतुं ? (च के०) वली (दंसणं के०)
दर्शन (कहं के०) केवुं हतुं ? अने (सीलं के०) आचार
कहं के०) केवो हतो ? ते (भिक्खु के०) हे भिक्षु ! तमे
जहातहेणं के०) यथातथ्य (जाणासिणं के०) जाणो
छो, ते (अहासुयं के०) जेम सांभल्युं होय अने सां
भलीने (जहाणिसंतं के०) जेम धार्युं होय, तेम
(बूहि के०) कहो. ॥ २ ॥

भावार्थः- ते ज्ञातपुत्र क्षत्रिय शिरोमणी सिद्धार्थ
राजाना पुत्र श्री वर्द्धमानस्वामीए विशेष प्रकारे ज
णावनारुं ज्ञान केवी रीते संपादन कर्युं ? अथवा ते
ज्ञान, सामान्य अर्थने जणावनारुं दर्शन अने यम
नियम रूप आचार, तेमनो केवो हतो ? ते हे श्री सु
धर्मस्वामिन्! आप सम्यक् प्रकारे जाणो छो, ते जेम सां
भल्युं होय, सांभलीने हृदयने विषे धारण कर्युं होय
अने जेम दीठुं होय, तेम कृपा करी प्रकाशो. ॥ २ ॥

एवी रीते पूछवाथी सुधर्मस्वामी, श्री महावीर
देवना गुणो वर्णवे छे.

खेयन्ने से कुसले महेसी,
अणंतनाणी य अणंतदंसी ॥
जसस्सिणो चक्खुपहट्ठियस्स,
जाणाहि धम्मं च धिइं च पेही ॥ ३ ॥

अर्थः-(से के०) ते (खेयन्ने के०) संसारी जीवोना खेद(दुःख)ना जाण एवा,तथा कुसले के०)कर्मने विदरवामां निपुण एवा,तथा(महेसी के०)म्होटा ऋषी अथ एवा,तथा(अणंतनाणी के०) अनंतज्ञानी (य के०)तथ (अणंतदंसी के०) अनंतदर्शि एवा,तथा (जसस्सिणो के०) संपूर्ण यशस्वी एवा अने (चक्खुपहट्ठियस्स के०) लोकोने दृष्टिगोचर अथवा लोकने चक्षुभूत एवा श्री महावीर देव, तेमना प्ररूपेला (धम्मं के०) धर्मने (च के०) तथा, तेमनी (धिइं के०) धिरजने हे जंबू! तुं (जाणाहि के०) जाण (च के०) अने (पेही के०) देख अर्थात् विचार. ॥ ३ ॥

भावार्थः-ते चोत्रीश अतिशये करी विराजमान भगवंत (खेयन्ने के०) खेदज्ञ एटले संसारी जीवोना कर्म

देपाकर्षी इत्यादि घणुंज कुःखने जाणीने. तेमने उप
द्रा देद ते कुःख टाळवाने समर्थ, अथवा (रोग
रे के०) देत्यज्ञः एटले आत्मस्वरूपने जाणनार,
अथवा (गेयदे के०) देत्यज्ञः एटले लोक अने
अलोकना स्वरूपने जाणनारा, आठ कर्म रूप कुशने
छेदनार अर्थात् प्राणियोनां कर्मने कापी नांखवा
मां निपुण, उग्र तपश्चर्या करनारी अने गाढ परिस
ह उपसर्ग सहन करनारी मोटा ऋषीश्वर, तथा
(पाठांतरे सुपन्न एवो पाठ छे तेथी) अपरथना
जेवी बुद्धि नहि, पण शिव बुद्धिवान्, तथा केवल
ज्ञान अने केवलदर्शने करी युक्त एवा भगवंतनो न
र, सुर अने असुर लोकमां जश व्यापी रह्यो छे, माटे
यशस्वी तथा लोकोने दृष्टिगोचर अर्थात् केवलज्ञा
न पछीनी अवस्थाने आश्रीने भगवंतने लोको दे
खी शके छे, अथवा लोकोना अंतर्गत भावने प्रका
श करे छे. माटे चक्षुसमान; एवा श्री महावीर देव,
तेमना संसारमांथी उद्धार करनारा श्रुत चारित्र रू
प धर्मने, तथा देवादि कृत उपसर्गथी पण चळे नहि
एवी तेमनी धिरजने हे जंबू ! तुं जाण अने पछी
ज सूक्ष्म बुद्धिथी विचार. ॥ ३ ॥

वळी पण सुधर्मस्वामी भगवंतना गुणो कहे छे.

उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु,
तसा य जे थावर जेय पाणा ॥
से णिच्चणिच्चेहिं समिक्ख पन्ने,
दीवेव धम्मं समियं उदाहु ॥ ४ ॥

अर्थः-(उड्ढं के०) ऊर्ध्व (अहेयं के०) अधो अ (तिरियं के०) तीर्छि, ए त्रण (दिसासु के०) दिशाओ मां (जे के०) जे (तसा के०) त्रस (य के०) अ (जेय के०) जे (थावर के०) स्थावर (पाणा के०) प्राणीओ छे, तेमने (से के०) ते (पन्ने के०) प्राज्ञ ए भगवंते (णिच्चणिच्चेहिं के०) नित्यानित्य भेदे (समि के०) सम्यक् प्रकारे जाणीने (दीवेव के०) द्वी समान जेवा (समियं के०) समतानी पूरो (धम्मं के०) धर्म, ते (उदाहु के०) कह्यो छे.॥४॥

भावार्थः-ऊर्ध्व, अधो अने तीर्छि ए त्रण दिश मां रहेला चौदराज लोकमां, जे त्रस अने स्थाव प्राणीओ छे, तेमने प्राज्ञ एवा भगवंत श्री महावी देवे केवलज्ञानवडे नित्यानित्य भेदे करीने प्रत्य दीठ अने सर्वज्ञपणे करीने, सम्यक् प्रकारे ज

ीने संसार समुद्रमां बूडता प्राणियोने द्वीप समा
।. अथवा सर्व पदार्थना भाव प्रगट करवाथी दीवा
समान मूल चारित्र रूप *समवायी धर्म उपदेश देवा
तेम पुरुषो प्रत्ये कह्यो छे. ॥ ४ ॥

वली ते भगवंत केवा हता? ते कहे छे.

से सव्वदंसी अभिभूयनाणी,
णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा ॥
अणुत्तरे सव्व जगंसि विज्जं,
गंथा अतीते अभये अणाऊ ॥ ५ ॥

अर्थः–(से के०) ते भगवंत (सव्वदंसी के०) सर्व
र्शि एवा, तथा (अभिभूयनाणी के०) परिसह जी
ीने प्राप्त कर्युं छे केवलज्ञान जेमणे एवा, तथा (णि
ामगंधे के०) मूल अने उत्तर गुण विशुद्ध संयम पा
ळनारा एवा तथा (धिइमं के०) धैर्यवंत एवा तथा (ठि
यप्पा के०) स्थित थयो छे आत्मा जेमनो एवा, तथा (स

* इहां समवायी धर्म कह्यो छे, तेनुं कारण ए छे के, श्री वी
तराग देव द्रव्यवान् तथा गरिब माणसोने एक सरखो ज या
बोधी उपदेश देता हता-कारण के, ते एकांत प्राणियोना हितने
अर्थे ज देशना देता हता, पण पोतानी पूजा सत्कार थवा...

व जगंसि के०) सर्व जगत्ने विषे (अणुत्तरे के०) निर
म प्रधान (विज्जं के०) ज्ञानवान एवा, तथा (गंथा के
परिग्रह थकी (अतीते के०) रहित एवा तथा (अज
के०) नये करी रहित एवा अने (अणाऊ के०) चार
तिना आउखाथी रहित एवा श्रीमहावीर देव हता.

जावार्थः–ते जगवंत सर्वदर्शि एटले लोकालो
ना जावने देखनारा, मतिज्ञानादि चार ज्ञान
म्होटुं जे केवलज्ञान, ते वावीश परिसहने जीती
प्राप्त कर्युं छे जेमणे एवा, मूलोत्तर गुण संयमना
लनार, असह्य परीसह उपसर्गने सहन करवा
धैर्यवान्, समस्त कर्म नाश पामवाथी स्थित थयो
आत्मा जेमनो एटले निर्मल आत्मावंत, सर्व ज
तने विषे निरुपम ज्ञानवान् अर्थात् सर्व जगत्
रहेला पदार्थोने हाथमां रहेला आमलानी पेठे जु
णनारा, इत्यादि बाह्य ग्रंथ अने कर्मादि आभ्यंतर
ग्रंथ ए वे प्रकारना ग्रंथथी रहित, तथा इहलोक
जय, परलोक जय, आदान जय, अकस्मात् जयअ
वेदना जय, अपकीर्त्ति जय अने मरण जय; ए सातो
प्रकारना जयथी रहित अने देवता, मनुष्य, तिर्यंच
तथा नारकी ए चार गतिना आउखाथी रहित एव

से पाती नांख्युं छे धर्म रूप बीज जेमणे एवा श्री
हावीर देव हता. ॥ ५ ॥

से भूइपन्ने अणिएअचारी,
उदंतरे धीरे अणंतचक्खु ॥
अणुत्तरे तप्पइ सूरिएवा,
वइरोयणिंदेव तमं पगासे ॥ ६ ॥

अर्थः-(से के०) ते भगवंत (भूइपन्ने के०) अ
न ज्ञानवान् एवा. तथा (अणिएअचारी के०) अ
प्रतिबंध विहारी एवा, तथा (उदंतरे के०) संसार
ा तरनार एवा, तथा (धीरे के०) धिरजवान्
ा. तथा (अणंतचक्खु के०) अनंतज्ञान रूप चक्षु छे
ने एवा, ते (सूरिएवा के०) सूर्य जेम (अणुत्तरे
) सर्वथी अधिक (तप्पइ के०) तपे छे, तेम भगवं
पण ज्ञाने करी सर्वोत्तम छे. वली (वइरोयण के०)
रोचन अग्नि,ते जेम सकलगवाची (इंदेव के०) इंद्रनी
छे (तमं के०) अंधकारने दूर करी (पगासे के०)
काश करे छे, तेम भगवंत पण अज्ञान रूप अंध
ारने दूर करी यथास्थित तत्त्वने प्रकाश करे छे. ६
भावार्थः-वली ते भगवंत अनंत ज्ञानवान् अथवा

सर्व संगउनी बुद्धिमां कुशल. अप्रनिबंधपणे वि
करवानो ने आचार जेमनो एवा संसार समु
तरनार. बुद्धिये करी विराजमान अथवा परी
अने उपसर्गने सहन करवाने समर्थ. अनंता
वा योग्य पदार्थने जाणनार अथवा अनंत ल
रहेला पदार्थने प्रकाश करनार एटले अनंत
रूप चक्षुना धरनार. ने सूर्य जेम सर्वथी अ
तपे ने. नेम नगवंत पण ज्ञाने करी सर्वोत्तम
वली वैरोचन अग्नि ने जेम ससगवार्थी उडनी
अंधकारने दूर करी प्रकाश करे ने. नेम श्री
वीर देव पण अज्ञान रूप अंधकारने दूर करी
स्यत नत्त्वने प्रकाश करे ने. ॥ ६ ॥

अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं,
णेया मुणि कासव आसुपन्ने ॥
इंदेव देवाण महाणुनावे,
सहस्सणेता दिविणं विसिठे ॥ ७ ॥

अर्थः—(दिविणं के०) देवलोकने विषे (इंदेव के
इंद्र जेम (देवाण के०) देवोमां (महाणुनावे के०
हा प्रजावधान तथा (सहस्सणेता के०) हजारो दे

…नायक (विविहे के०) सर्वोत्तम छे जेम (जिणाणं के०) … तीर्थंकरोए प्ररूपेलो (अणुत्तरं के०) सर्वोत्तम ए… (धम्मामिणं के०) आ जे धर्म, तेने (णेता के०) …पनार वर्त्तमान (कासव के०) काश्यपगोत्री अने (…आसुपन्ने के०) केवलज्ञानी एवा (मुणि के०) आ …श्री वर्द्धमान मुनि सर्वथी उत्तम छे. ॥ ७ ॥

भावार्थः- देवलोकने विषे इंद्र जेम देवोमां महा… नायकना. एजरीते देवोनो नायक अने विविध…, रूप तथा वर्णादिके सर्वोत्तम छे. तेम श्री … …पलाथी विषे तीर्थंकरोए प्ररूपेला सर्वोत्तम ध… …ना प्रधान वर्त्तमान काश्यपगोत्री अने केवलज्ञानी … श्री वर्द्धमानस्वामी सर्व थकी उत्तम छे. ॥ ७ ॥

से पवया अक्खय सागरेवा,
महोदहिवावि अणंतपारे ॥
अणाइलेवा अकसाइ भिक्खू,
सक्केव देवाहिवइ जुईमं ॥ ८ ॥

अर्थः-(से के०) ते श्रमण (…
…री (अक्खय के०) अक्षय यथा…
…समुद्र पेठे ते सोह (महोदहि…

वरणादि कर्म बंधनना अजावथी मुक्त एवा अनेक गुण युक्त तथा देवतानो स्वामी जे शक्रेंद्र, तेनी पेठे तेजस्वी एवा श्री महावीर देव छे. ॥ ८ ॥

से वीरिएणं पडिपुन्न विरिए,
सुदंसणेवा णगसव सेठे ॥
सुरांलएवासि मुदागरे से,
विरायए ऽणेगगुणोववेए ॥ ए ॥

नामे म्होटो समुद्र. ते जेम (अणंतपारे के०) अ
अपार अने (अणाइलेया के०) निर्मल जलवालो
तेम जगवंतनुं ज्ञान पण निर्मल ठे. वली ते जग
(अकसाइ के०) कपाय रहित एवा. तथा (जिस्कु के
जिक्षाये आजीविका करनारा एवा अने (देवाहि
के०) देवतानो अधिपति जे (सक्क के०) शक्रेंद्र, ते
पेठे (जुइमं के०) तेजस्वी एवा श्री महावीर देव
जावार्थः—ते जगवंत बुद्धिये करी अक्षय एटले
एवा योग्य पदार्थने विषे कालथी सादि अनंत,
द्रव्य, क्षेत्र अने जावथी अनंत एवी केवलज्ञान
बुद्धि, तेणे करीने अक्षय एवा, इहां सर्व रीते ते
लतुं आवे तेवा दृष्टांतना अजावथी, फक्त एक दे
दृष्टांत कहीए ठीए. जेम स्वयंजूरमण नामे म्होटो
मुद्र ते विस्तीर्ण, गंजीर अने निर्मल जलवालो
म जगवंतनुं ज्ञान पण विस्तीर्ण, गंजीर अने
रुप मलना अजावथी निर्मल ठे. वली ते जगवं
य रहित, जो के समस्त अंतराय कर्मने क्षय कर
त्रैलोक्यने पूज्य ठे, तथापि जिक्षाये आजीविका क
अक्षीणमहानसी प्रमुख लब्धिने प्रयुंजता
तथा (पाठांतरे मुक्के एवो पाठ ठे तेथी) ज्ञान

हजार जोजन (हेठ के०) नीचो पृथ्वीमां छे ॥ १० ॥

भावार्थः—ते मेरुपर्वत एक लाख जोजननो छे, तेना एक भूमिमय, बीजो सुवर्णमय अने त्रीजो वैडूर्यरत्नमय एवा त्रण कांड छे, तथा ते मेरुपर्वतनी टोच उपर पंडक वन आवी रह्युं छे, ते जाणे तेने ध्वजा ज होय नहि! तेवुं दीपे छे. वली ते मेरुपर्वत नवाणु हजार जोजन उंचो अने एक हजार जोजन नीचो भूमिमय कंद रूपे छे. ॥ १० ॥

पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए,
जं सूरिया अणुपरिवट्टयंति ॥
से हेमवन्ने बहु नंदणे य,
जंसी रइं वेदयंति महिंदा ॥ ११ ॥

अर्थः—वली ते मेरुपर्वत (णभे के०) आकाशने (पुट्ठे के०) फरसीने (चिट्ठइ के०) रह्यो छे, तथा (भूमिवट्ठिए के०) भूमिने अवगाही रह्यो छे, वली (जं के०) मेरुपर्वतनी आशपाश (सूरिया के०) सूर्य प्रमुख [illegible] (अणुपरिवट्टयंति के०) प्रदक्षिणा करी [illegible] (से के०) ते मेरुपर्वत (हेमवन्ने के०) सुवर्ण [illegible] वाळो छे. (य के०) वली, ते मेरुपर्व

तने विषे (बहु के०) घणां एटले चार (नंदणे के०) नं दन वन छे (जंसी के०) जेने विषे (महिंदा के०) म्होटा इंद्रो पण (रइं के०) रतिसुख (वेदयंति के०) वेदे छे. ११

भावार्थः—वली ते मेरुपर्वत आकाशने फरशी र हेलो, एटले व्यापी रहेलो छे अने भूमिने अव गाही रह्यो छे. ए रीते ऊर्ध्व, अधो अने तिर्यक्लो कने फरशी रह्यो छे. वली जे मेरुपर्वतनी आशपाश अगीयारशेने एकवीश जोजनने आंतरे सूर्य प्रमुख ज्योतिषी देवो प्रदक्षिणा करी रह्या छे. वली ते मेरु पर्वत तपेला सुवर्णना जेवी कांतिवालो छे अने ते मेरुपर्वतने रमणिक एवां नंदनादिक चार वन छे, तेनुं वर्णन कहीए छीए.

भूमि ऊपर भद्रशाल वन छे, त्यांथी पांचशे जोजन ऊंचा चढीए, त्यां मेखलाने विषे बीजुं नंदन वन छे, वली ते ऊपर साडीबाशठ हजार जोजन ऊंचा चढीये, त्यां त्रीजुं सौमनस वन छे, वली पण तेना ऊपर छत्रीश हजार जोजन ऊंचे शिखर ऊपर चोथुं पंडक वन छे; ए रीते ते मेरुपर्वत नंदनादिक चार वनसहि त विचित्र प्रकारनां क्रीडा करवानां स्थान युक्त छे, जेने विषे म्होटा इंद्रो पण देवलोकमांथी आवीने

अधिक रमणीय गुणवडे रतिसुखने जोगवे ठे. ॥ ११ ॥

से पवए सद्द महप्पगासे,
विरायइ कंचणमठ्ठवन्ने ॥
अणुत्तरे गिरिसु य पव्वड्डुग्गे,
गिरिवरे से जलिएव जोमे ॥ १२ ॥

अर्थः—वली (से के०) ते (पवए के०) मेरुपर्वत (सद्द के०) लोक शब्दे (नामे) करी (महप्पगासे के०) महा प्रकाशवान् (विरायइ के०) शोभे ठे, वली ते मेरु (कंचणमठ्ठवन्ने के०) सुवर्णनी पेठे शुद्ध वर्णवालो, तथा (गिरिसु के०) पर्वतोमां (अणुत्तरे के०) प्रधान (य के०) तथा (पव्वड्डुग्गे के०) मेखलाए करी विषम अने वली (से के०) ते (गिरिवरे के०) गिरिराज, मणि अने औषधियोए करी देदीप्यमान ठे, तेथी (जोमे के०) जमीननी पेठे (जलिएव के०) जलजलायमान थइ रह्यो ठे. ॥ १२ ॥

भावार्थः—वली ते मेरुपर्वत १ मंदर, २ मेरु, ३ मनोरम, ४ सुदर्शन, ५ स्वयंप्रज, ६ गिरिराज, ७ रत्नोचय, ८ तिलकोपम, ९ लोकमध्य १० लोकनाजी, ११ रत्न, १२ सूर्यावर्त्त, १३ सूर्यावर्ण, १४

[illegible]

[illegible] ॥१५॥

[illegible] गिरिराज नामे [illegible] ([illegible] के०) पर्वतनो [illegible] छे. ([illegible] के०) ए पू [illegible] करी ([illegible] के०) [illegible] [illegible] श्री महावीरस्वामी, [illegible] करी (जसो के०) जशे करी [illegible] करी (नाण के०) ज्ञाने करी अने [illegible] करी प्रधान कहेवाय छे. ॥१४॥

[illegible] जेम मेरु गिरिराज नामे म्होटा प [illegible] कहेवाय छे, ए पूर्वोक्त मेरु पर्वतनी उपमाये [illegible] ज्ञातपुत्र श्री महा[illegible]स्वामी जातिये, [illegible] ज्ञाने अने [illegible] एटले [illegible] सोकोथी, [illegible] पुरुषो [illegible] लोकोथी, सर्व दर्शनि[illegible] ज्ञा [illegible] सर्वे सदाचारी पुरुषो[illegible] प्र[illegible] कहेवाय छे. ॥ १४ ॥

एतोवमे समणे नायपुत्ते,
जाई जसो दंसण नाण सीले ॥ १४ ॥

अर्थः-(जसो के०) आ जश (सुदंसणस्सेव गिरिस्स के०) सुदर्शन एटले मेरु गिरिराज नामे (महतो के०) म्होटा (पव्वयस्स के०) पर्वतनो (पवुच्चई के०) कहेवाय छे. (एतोवमे के०) ए पूर्वोक्त मेरुनी उपमाये करी (समणे के०) श्रमण एवा जे (नायपुत्ते के०) ज्ञातपुत्र श्री महावीरस्वामी, ते (जाई के०) जातिये करी (जसो के०)जशे करी (दंसण के०) दर्शने करी (नाण के०) ज्ञाने करी अने (सीले के०) आचारे करी प्रधान कहेवाय छे. ॥१४॥

जावार्थः--आ जश मेरु गिरिराज नामे म्होटा पर्वतनो कहेवाय छे, ए पूर्वोक्त मेरु पर्वतनी उपमाये श्रमण जगवंत ज्ञातपुत्र श्री महावीरस्वामी जातिये, जशे, दर्शने, ज्ञाने अने आचारे करी एटले उत्तम जातिवाला लोकोथी, यशस्वी पुरुषोथी, कीर्त्तिवान् लोकोथी, सर्व दर्शनियोथी, सर्व ज्ञानीउं थी अने सर्व सदाचारी पुरुषोथी उत्तम एटले प्रधान कहेवाय छे. ॥ १४ ॥

गिरिवरेवा निसढो ययाणं,
रुयएव सेठ वलयायताणं,
तउवमे से जगभूइपन्ने,
मुणीण मझे तमुदाहु पन्ने ॥ २५ ॥

अर्थः- (ययाणं के०) लांबा पर्वतोमां (निसढो के०) निषध नामे (गिरिवरेवा के०) पर्वत जेम सर्वथी म्होटो छे, तेम ज (वलयायताणं के०) गोलाकार पर्वतोमां (रुयएव के०) रुचक पर्वत, जेम (सेठ के०) श्रेष्ठ छे. तेम श्री महावीर देव पण (तउवमे के०) ते उपमा युक्त छे. ए प्रकारे (से के०) ते भगवंत श्री वीरस्वामी(जगभूइपन्ने के०)जगत्ने विषे घणी ज प्रसिद्ध प्रज्ञावंत करीने श्रेष्ठ कह्या छे, तथा (मुणीण मझे के०) सर्व मुनियोनी मध्ये (तं के०) ते भगवंतने (पन्ने के०) प्राज्ञ (उदाहु के०) कह्या छे.

भावार्थः-जंबूद्वीप तथा अन्य द्वीपोना लांबा पर्वतोमां जेम निषध पर्वत सर्वथी म्होटो छे, तेमज गोलाकार पर्वतोमां जेम रुचक पर्वत सर्वथी श्रेष्ठ छे, तेम श्री महावीर देव पण ते उपमा युक्त एटले लांबपणमां अने गोलाकारमां अर्थात् संघयण,संस्थान अने

मानोन्माने करी सर्वथी श्रेष्ठ छे. ए प्रकारे ते जगवंत श्री महावीरस्वामी जगतने विषे ज्ञानी ज प्रसिद्ध प्रज्ञा ये करीने श्रेष्ठ कह्या छे. तथा सर्व मुनिओनी मध्ये ते जगवंतने, सर्वथी उत्कृष्ट ज्ञानवान कह्या छे. ॥१५॥

अणुत्तरं धम्म–मुईरइत्ता,
अणुत्तरं जाणवरं झियाइं ॥
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं
संखिंदुवेगंतवदातसुक्कं ॥ १६ ॥

अर्थः–वली ते जगवंत (अणुत्तरं के०) प्रधान एवो जे (धम्मं के०) धर्म, तेने (उईरइत्ता के०) प्रकाशीने (अणुत्तरं के०) प्रधान एवुं, तथा (सुसुक्कसुक्कं के०) सुंदर उज्वलमां उज्वल एवुं, तथा (अपगंडसुक्कं के०) दोष रहित उज्वल एवुं, तथा (संखिंदुव के०) शंख अने चंद्रमानी पेठे (एगंतवदातसुक्कं के०) एकांत उज्वल एवुं अने (जाणवरं के०) सर्व ध्यानमां प्रधान एवुं जे शुक्लध्यान, तेने (झियाइ के०) ध्याय छे. ॥१६॥

जावार्थः–ते जगवंत प्रधान धर्मने प्रकाशीने सर्वोत्तम, सुंदर उज्वलमां उज्वल, दोष रहित अर्जुन सुवर्णनी पेठे उज्वल अथवा पाणीना फेण सरखुं उज्व

स, तथा अंग अने चंद्रमा सरखुं एकांत उज्वल अने सर्व ध्यानमां प्रधान जे शुक्लध्यान, तेने केवलज्ञान प्राप्त थया पछी श्रीमहावीर देव, योग निरोधने अवसरे सूक्ष्मकाययोगनो निरोध करता सता, शुक्लध्यानो त्रीजो भेद जे सूक्ष्मक्रियअप्रतिपात नामे अने योग रुंधाया पछी शुक्लध्याननो चोथो भेद जे व्युपरतक्रिय अनिवृत्त नामे, ए रीते बे भेदे ध्याय छे.

अणुत्तरग्गं परमं महेसी,
असेसकम्मं स विसोहइत्ता ॥
सिद्धिंगइ साइमणंत पत्ते,
नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥ १७ ॥

अर्थः-(स के०) ते (महेसी के०) म्होटा ऋषीश्वर एवा श्री महावीर देव (असेसकम्मं के०) समस्त कर्मने (विसोहइत्ता के०) खपावीने (नाणेण के०) ज्ञाने करी (दंसणेण के०) दर्शने करी (य के०) वली (सीलेण के०) चारित्रे करी (अणुत्तरग्गं के०) सर्वोत्तम एवा लोकना अग्रभागे (परमं के०) उत्कृष्ट एवी अने (साइमणंत के०) सादि अनंत भांगे एवी जे (सिद्धिंगइ के०) सिद्धिगति, तेने (पत्ते के०) पाम्या.

भावार्थः–ते म्होटा रुषीश्वर श्री महावीर देव शै
शी अवस्थाये शुक्लध्यानना चोथा भेदने अनंतर ज्ञा
वरणीयादिक समस्त कर्मने विशोधीने एटले ख
वीने ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने क्षायक समकित क
सर्वोत्तम एवा लोकना अग्रभागे उत्कृष्ट सादि अ
त एटले जेनी आदि छे, पण अंत नथी एवी पां
मी सिद्धिगतिने पाम्या. अर्थात् मोक्षगतिमां गय

वली उपमाये करी भगवंतने स्तवे छे.

रुक्खेसु णाए जह सामलीवा,
जस्सिं रइं वेदयंति सुवन्ना ॥
वणेसुवा नंदण–माहु सेठं,
नाणेण सीलेण य भूइपन्ने ॥ १८ ॥

अर्थः–(जह के०) जेम (रुक्खेसु के०) वृक्षोने
पे (सामलीवा के०) शाल्मली वृक्ष (णाए के०
प्रसिद्ध छे (जस्सिं के०) जे वृक्षने विषे (सुवन्ना के
सुवर्णकुमार देवो (रइं के०) रतिसुखने (वेदयं
के०) वेदे छे. वली (वणेसुवा के०) वनने विषे,
म (नंदणं के०) नंदन वन (सेठं के) श्रेष्ठ (आ
के०) कह्युं छे, तेम (नाणेण के०) ज्ञाने करी (

(૨૦) પછી (ત્રીજુ શ્લો૦) ચારિત્ર ધર્મ (સૂત્રપંચે શ્લો૦,
પ્રવૃત્તાની પૂજા શ્રી મહાવીર દેવ [illegible] ॥ ૨૦ ॥
ભાવાર્થ—પૂજાને વિષે જેમ દેવકુલ, [illegible]
[illegible] પૂજા [illegible]
પૂજાને વિષે [illegible]
[illegible]
[illegible] પછી [illegible] વિષે [illegible]
[illegible]
[illegible]
મહાવીર [illegible] ॥ ૨૦ ॥

[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ૨૧ ॥

[illegible] પછી [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

उंमां जेम (चंदणं के०) चंदन (मेहं के०) श्रेष्ठ (श्राहु के०) कह्युं छे; (एवं के०) ए प्रकारे (मुणीणं के०) मुनियोमां (अपडिन्नं के०) प्रतिज्ञा रहित एटले आलोक परलोकनी आसंशा रहित एवा; जगवंत श्री वीरस्वामी श्रेष्ठ (आहु के०)कह्या छे. ॥ १९ ॥

जावार्थः–वली सर्व जातिना शब्दोने विषे जेम मेघनी गर्जनानो शब्द सर्वोत्तम छे, ताराने विषे जेम चंद्रमा प्रधान छे, एटले सर्व अंधकारने दूर करनारी कांतिथी मनोरम छे, गंधवाली वस्तुउंमां जेम गोशीर्ष चंदन अथवा बावना चंदन श्रेष्ठ कह्युं छे, तेम सर्व मुनियोमां अप्रतिज्ञ अर्थात् प्रतिज्ञा रहित एटले आलोक परलोकनी आसंशा रहित एवा जगवंत श्री महावीर देव श्रेष्ठ कह्या छे. ॥ १९ ॥

जहा सयंजू उदहीण सेठे,
नागेसुवा धरणिंद–माहु सेठं ॥
खोउदएवा रसवेजयंते,
तवोवहाणे मुणि वेजयंते ॥ २० ॥

अर्थः–(जहा के०) जेम (उदहीण के०) सर्व समुद्रोमां (सयंजू के०) स्वयंजूरमण समुद्र (सेठे के०)

श्रेष्ट कह्यो छे, तथा (नागेसुवा के०) नागकुमार
मां जेम (धरणिंदं के०) धरणेंद्र (सेठं के०) श्रेष्ठ (
(के०) कह्यो छे अने (खोउदएवा के०) इक्षोद
नामे समुद्र ते जेम (रसवेजयंते के०) रसमां प्रधान
म (तवोवहाणे के०) तप उपधाने करी (मुणि वेज
के०) मुनियोमां प्रधान श्री महावीरदेव छे. ॥२०

भावार्थः–सर्व समुद्रोमां जेम स्वयंभूरमण समुद्र
जेने विषे स्वयंभू नामे देवो, आवीने क्रीडा करे
, तेथी स्वयंभूरमण समुद्र नाम पड्युं छे, वली सर्व
द्वीप अने सर्व समुद्रोने अंते फरीवळेलो स्वयंभूरम
ण समुद्र) श्रेष्ठ कह्यो छे, नागकुमार देवोमां जेम
धरणेंद्र श्रेष्ट कह्यो छे, जेनुं पाणी शेलडीना रस जेवुं छे
वो इक्षोदक समुद्र, जेम रसमां प्रधान अने
ताना गुणवडे सर्व समुद्रोने विषे ध्वजा समा
छे, तेम तप उपधाने करी मुनियोमां प्रधान अ
न त्रण जगत्नी अवस्थाने जाणनारा श्री महावीर
परमात्मा छे. ॥ २० ॥

हत्थिसु एरावण–माहु णाए,
सीहो मियाणं सलिलाण गंगा ॥

पक्खिसुवा गेरुले वेणुदेवे,
निव्वाणवादीणिह णायपुत्ते ॥ २१ ॥

अर्थः--(हत्थिसु के०) हाथीर्ठने विषे, जेम (
रावणं के०) ऐरावण हाथी (णाए के०) प्रध
(आहु के०) कह्यो ठे,तथा (मियाणं के०) मृग प्रमु
श्वापद जनावरोमां, जेम (सीहो के०) सिंह प्रध
कह्यो ठे, तथा (सलिलाण के०) पाणीयोने वि
जेम (गंगा के०) गंगा नदीनुं पाणी श्रेष्ठ कह्युं
अने (पक्खिसुवा के०) पक्षीर्ठने विषे, जेम (गेर
के०) गरुड पक्षी अपर नामे (वेणुदेवे के०) वे
देव प्रधान कह्यो ठे; तेम (निव्वाणवादीणिह के०
निर्वाण मार्गना वादियोमां आ (णायपुत्ते के०
ज्ञातपुत्र श्री वर्द्धमानस्वामी श्रेष्ठ कह्या ठे. ॥ २१

जावार्थः– हाथीर्ठमां इंद्रनुं वाहन ऐरावण
थी, मृग प्रमुख श्वापद जनावरोमां सिंह, जरतक्षे
नी अपेक्षाये अनेक जातनां पाणीयोमां गंगा नदी
पाणी अने पक्षीर्ठमां गरुड पक्षी अपर नामे वेणुदे
जेम प्रधान कह्या ठे,तेम निवार्ण एटले मोक्ष अर्था
कर्म क्षय थवानुं ठे लक्षण जेनुं एवा सिद्धक्षेत्र (

लवयाना उपाय) ना उपदेशकोमां सिद्धार्थ क्षत्रि
ना पुत्र श्री वर्द्धमानस्वामी प्रधान कह्या छे. ॥ २१ ॥

जोहेसु णाए जह वीससेणे,
पुप्फेसुवा जह अरविंद—माहु ॥
खत्तीण सेठे जह दंतवक्के,
इसीण सेठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥

अर्थः—(जोहेसु के०) योद्धाउने विषे (जह
के०) जेम (वीससेणे के०) विश्वसेन एटले चक्रवर्ती
(णाए के०) प्रधान कह्यो छे,तथा (पुप्फेसुवा के०) फू
लोने विषे (जह के०) जेम (अरविंद के०) अरविंद क
मल, प्रधान (आहु के०) कह्युं छे अने (खत्तीण के०)
क्षत्रियोने विषे (जह के०)जेम (दंतवक्के के०) दांतवा
क्य एवो चक्रवर्ती (सेठे के०) श्रेष्ठ कह्यो छे; (तह के०)
तेम (इसीण के०) ऋषियोने विषे (वद्धमाणे के०)
श्री वर्द्धमानस्वामी (सेठे के०) श्रेष्ठ कह्या छे. ॥२२॥

भावार्थः—योद्धाउने विषे जेम विश्वसेन एटले हा
थी, घोडा, रथ अने पायदलवाली संपूर्ण सेनावालो
चक्रवर्ती प्रधान कह्यो छे, फूलोने विषे जेम अर
विंद एटले सूर्यविकाशी कमल प्रधान कह्युं छे अ

ने-क्षत्रियोने विषे जेम दांतवाक्य एटले जेना वच
न मात्रथी ज शत्रुओ उपशांत पामे छे एवो चक्रवर्ति
श्रेष्ठ कह्यो छे; तेम सर्व ऋषियोने विषे श्री वर्द्धमा
नस्वामी श्रेष्ठ कह्या छे. ॥ २२ ॥

दाणाण सेठं अन्नयप्पयाणं,
सच्चेसुवा अणवज्जं वयंति ॥
तवेसुवा उत्तम बंभचेरं,
लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥ २३ ॥

अर्थः–(दाणाण के०) दानने विषे, जेम (अन्न
प्पयाणं के०) अनयप्रदान (सेठं के०) श्रेष्ठ कह्
छे, तथा (सच्चेसुवा के०) सत्य वचनोने विषे, जे
कोइ जीवने पीडा न थाय एवा (अणवज्जं के०) अ
नवद्य वचनने श्रेष्ठ (वयंति के०) कहे छे, तथा(त
वेसुवा के०) तपने विषे जेम (बंभचेरं के०) ब्रह्मचर्य
ने (उत्तम के०) श्रेष्ठ कह्युं छे;तेम(लोगुत्तमे के०)सर्व
लोकने विषे उत्तम अने(समणे के०)श्रमण एवा(ना
यपुत्ते के०) ज्ञातपुत्र श्री महावीरदेव श्रेष्ठ छे. ॥२३॥

नावार्थः–जे पोताना अने परना कल्याणने अर्थे
देवामां आवे छे तेने दान कहेवाय छे. ते दान अनेक

कारनां छे. तेमां पण जीवितना अर्थि प्राणियोनुं र
ण करवाथी अभयदान श्रेष्ठ कयुं छे. कयुं छे के–

दीयते म्रियमाणस्य, कोटि जीवितमेव वा ॥
धनकोटिं न गृह्णीयात्, सर्वो जीवितुमिच्छति ॥ १ ॥

अर्थः–जे मरता माणसने क्रोड सोनैया, अथवा
जीवित आपवामां आवे, तो ते बेमांथी क्रोड सोनै
ा न लेतां, ते जीवितने ज इच्छे छे. ॥ १ ॥

ते उपर चोरनी कथा कहे छे.

वसंतपुर नगरने विषे अरिदमन नामे राजा राज्य
रतो हतो. ते एकदा पोतानी चार राणियो सहित
ोखने विषे क्रीडा करतो हतो. एवा अवसरमां रा
ा हाथवाळो, गळामां करेणना फूलनी माळावाळो,
ातां वस्त्रवाळो, शरीरे राता चंदनना लेपवाळो अने
ना आगळ डुंडी वागी रही छे एवा चोरने राजमा
ं लेइ जतां राजा अने चार राणियोए दीठो. राणि
ोए चोरने देखीने पूछ्युं के, "एणे एवुं शुं दुष्कृत्य
र्युं छे के, आवा हवाले लेइजाय छे ?" त्यारे एक रा
पुरुषे कह्युं, "एणे पारकुं धन हरवाथी राज्यविरुद्ध
ाम कर्युं छे." ते सांभळी एक राणीए राजाने विनं
ी करी के,"आपे मने प्रथम जे वरदान आप्युं हतुं,

ते आज हुं मागुं तुं माटे ते वरदान आपो. जेथी हुं आने (चोरने) उपकार करुं !" राजाये ते वात कबुल करी, त्यारे राणीए चोरने स्नान विगेरे करावी एक ह जार सोनैया खरची शब्दादिक पांच प्रकारनुं विषय ख एक दिवस आप्युं. वली बीजी राणीए पण तेम बीजे दिवसे एकलाख सोनैया खरची सुख आप्युं, ली त्रीजी राणीए पण त्रीजे दिवसे एकक्रोड सोनै खरची सुख आप्युं; परंतु चोथी राणीए तो, राजा आज्ञा लेइ अभयदान वडे मरणथी बचाव्यो. त्य आ राणीनी बीजी त्रण राणीउंए मश्करी करीने कह " तें आने कांइ पण द्रव्य आप्युं नही" ? एम क वाथी ते राणीउंने मांहोमांहे एक बीजाने ते चोर म्होटो उपकार कोणे कर्यो ? ते बाबतनो विवाद यो. ते विवाद भागवा माटे राजाये चोरने बोलावी पूछ्युं के, "हे भाइ ! तने वधारे उपकार कोणे कर्यो? तेणे जबाब आप्यो के, " हे महाराज ! मैं मरणनी ब कर्थी स्नानादिक कांइ पण सुख जाण्युं नही ! परंत मने अभयप्रदान एवुं सांभलवाथी जाणे हुं फर थी ज जन्म पाम्यो होउं नहि ! एम जाणुं छुं !

ते ज कारण माटे सर्व दानोमां अभयप्रदान श्रे

त्युं छे. तथा सत्य शास्त्रोने विषे अनवद्य एटले पा
रहित वचन अर्थात् जेथी कोइ पण जीवने पीडा न
उपजे, एवा वचनने श्रेष्ठ कह्युं छे, परंतु जे वचनथी
र जीवने पीडा उत्पन्न थाय,एवुं वचन जो कदी व्यव
हारमां सत्य देखातुं होय, तो पण परने पीडा उत्पन्न
थवाना कारणथी तेने सत्य वचन न ज कहेवाय
अर्थात् ते असत्य वचन ज कहेवाय. कह्युं छे के–

लोकेपि श्रूयते वादो, यथा सत्येन कौशिकः ॥
पतितो वधयुक्तेन, नरके तीव्रवेदने ॥ १ ॥

लोकमां एवी कहेवत छे के, वध युक्त सत्य वचन
कहे एटले हिंसा युक्त सत्य वचन बोलवाथी कौशिक
नामनो साधु तीव्र वेदनावाली नरकने विषे गयो।
अहीं ते कौशिक साधुनी कथा संक्षेपथी कहीए छीए.

एकदा कौशिक मुनि वनने विषे काउस्सग्ग क
री ध्यानारूढ थया हता, तेवामां केटलाएक मृगो
तेमनी पासे थइने चाल्या गया. पाछळथी मृगने व
ध करनारा पारधियोए आवी मुनिने पूछ्युं के, "हे
मुने ! तमे म्हारा मृगोने जता दीठा ?" ते सांभळी
कांइ पण न बोलतां मुनि मौन रह्या. वळी पारधि
योए बीजी वार पूछ्युं, तो पण मुनि मौन रह्या.

वटे त्रीजी वार पूछ्युं तो पण मुनि न बोल्या,
पारधियोए मुनिने दोरडादिके ताडना तर्जना
री घणी ज पीडा उपजावी !! वली पारधियोए क
"हे मुने ! हजु पण जो तमे ते मृगोनी जाल व
वो तो तमने मूकी दइए." एम सांभली ते मुनि व
दिक परीसह सहन नहि करी शकवाथी बोल्या
"हे वधक ! तमारा मृगो आ अमुक मार्गे गया !!!"
ज वखत मुनिने पडता मूकी ते पारधियोए जे र
ते मृगो गया हता ते ज रस्ते जइ मृगोने हण्या

वांचनार, जो के, आ कौशिक मुनि, व्यवहार
सत्य वचन बोल्या हता, तथापि ते वधकारक वच
होवाथी मरीने तीव्र वेदनावाली नरकने विषे गय
वली पण ते ज विषय उपर वसुराजानी कथा कहे

वखाणवा लायक एवी शुक्तिमती नगरीमां अ
चंद्र राजानो वसु नामे पुत्र हतो. ते वसु न्हानप
थी सत्य वचन बोलनारो हतो.

हवे ते ज नगरीमां सर्व शास्त्रनो जाण क्षीरकदं
क नामे उपाध्याय रहेतो हतो. तेने स्वभावे कुटिल अ
शयवालो पर्वतक नामे पुत्र हतो. ते पर्वतक, वसुराज
अने त्रीजो नारद, ए त्रणे क्षीरकदंबक उपाध्याय पासे

णता हता. एकदा ते त्रणे शिष्य अगाशीमां सूता
. उपाध्याय पण अगाशीमां बेठो जागे छे, एवामां
आकाश मार्गे बे चारणमुनियो वातो करता चाल्या
ाय छे, तेमांथी एक मुनि बोल्या के, "आ त्रणमां
 जण तो, नरकगामी छे अने एक देवलोकगामी
छे." ए वार्ता सांभली उपाध्याय उद्वेग पाम्या.

पछी कोण देवलोकगामी अने कोण नरकगामी
छे ? तेनी परीक्षा करवा माटे गुरुए जूदा जूदा लो
टना त्रण कूकडा बनावी, त्रणे शिष्यने वहेंची आ
पीने कह्युं के, "ज्यां कोइ देखे नहि, त्यां एने मारी
ने आवजो." पछी वसुराजा अने पर्वतक ए बे जण
तो, जंगलमां जइ कोई एकांत जग्याये कूकडानो वि
नाश करीने आव्या ! अने नारदे तो घणां स्थानक
जोयां, पण क्यांहि कोइ न देखे एवुं स्थानक दीठुं न
ही, त्यारे कूकडाने पाछो आण्यो. ते देखी उपाध्याये
पूछ्युं के, "पाछो केम आव्यो ?" नारदे कह्युं. देव, दानव
अने ज्ञानी ए सर्वे ज्यां त्यां देखी रह्या छे, तेम ज म्हा
रो आत्मा पण देखतो हतो, माटे तमारी आज्ञानो
भंग करी एनो शी रीते विनाश करुं ? ते सांभली
उपाध्याये चिंतव्युं के, "आ नारद देवलोकगामी

वटे त्रीजी वार पूछ्युं तो पण मुनि न बोल्या,
पारधियोए मुनिने दोरडादिके ताडना तर्जन
री घणी ज पीडा उपजावी !! वली पारधियोए
"हे मुने ! हजु पण जो तमे ते मृगोनी भाल
वो तो तमने मूकी दइए." एम सांभली ते मुनि
दिक परीसह सहन नहि करी शकवाथी बोल्य
"हे वधक ! तमारा मृगो आ अमुक मार्गे गया !!!
ज वखत मुनिने पडता मूकी ते पारधियोए जे
ते मृगो गया हता ते ज रस्ते जइ मृगोने हण

वांचनार, जो के, आ कौशिक मुनि, व्यवहा
सत्य वचन बोल्या हता, तथापि ते वधकारक व
होवाथी मरीने तीव्र वेदनावाली नरकने विषे ग

वली पण ते ज विषय उपर [illegible]जानी कथा कहे

वखाणवा लायक एवी [illegible]
चंद्र राजानो वसु नामे पुत्र [illegible] वसु न्हान
थी सत्य वचन बोलनारो [illegible]

हवे ते ज नगरीमां सर्व [illegible]
क नामे उपाध्याय रहेतो [illegible]
शयवालो पर्वतक नामे पुत्र हत[illegible]
अने त्रीजो नारद, ए त्रणे क्षीर[illegible]

भणता हता. एकदा ते त्रणे शिष्य अगाशीमां सूता छे, उपाध्याय पण अगाशीमां वेगे जागे छे, एवामां आकाश मार्गे बे चारणमुनियो वातो करता चाल्या जाय छे, तेमांथी एक मुनि बोल्या के, "आ त्रणमां बे जण तो, नरकगामी छे अने एक देवलोकगामी छे." ए वार्त्ता सांभळी उपाध्याय उद्वेग पाम्या.

पछी कोण देवलोकगामी अने कोण नरकगामी छे ? तेनी परीक्षा करवा माटे गुरुए जूदा जूदा लो ना त्रण कूकडा बनावी, त्रणे शिष्यने वहेंची आ ने कह्युं के, "ज्यां कोइ देखे नहि, त्यां एने मारी आवजो." पछी वसुराजा अने पर्वतक ए बे जण , जंगलमां जइ कोई एकांत जग्याये कूकडानो वि श करीने आव्या ! अने नारदे तो घणां स्थानक ां, पण क्यांहि कोइ न देखे एवुं स्थानक दीठुं न त्यारे कूकडाने पाछो आण्यो. ते देखी उपाध्याये ं के, "पाछो केम आव्यो ?" नारदे कह्युं. देव, दानव ज्ञानी ए सर्वे ज्यां त्यां देखी रह्या छे, तेम ज म्हा ात्मा पण देखतो हतो, माटे तमारी आज्ञानो करी एनो शी रीते विनाश करुं ? ते सांभ ाये चिंतव्युं के, "आ नारद देव...

तथा पर्वतक अने वसुराजा ए त्रे नरकगामी छे." अ
नुक्रमे उपाध्याय आयुष्य पूर्ण करी देवलोके गया
एकदा एक आहेडीए वनमां जइ कोइ मृगन
उपर बाण नांख्युं, आगल जइने जोयुं तो. मृग
ठेकाणे स्फाटिकनी शिला दीठी. तेणे आवी राज
ने कह्युं. राजाये तुरत ते शिला छानी मंगाव
पीठिका मंडावी उपर सिंहासन थापी पोते बे
पा मांड्युं. तेथी सर्व लोक एम जाणवा लाग्या
वसुराजा सत्य वचनना प्रभावथी अद्धर बेसे
तेथी सिमाडिया राजा प्रमुख सर्व लोक तेनी से
करवा लाग्या. एटलुं ज नहि पण ते वसुराजा म
प्रतिष्ठावान् सत्यवादी [illegible] वाणो.
एकदा अवसरे पर्वत पर मलवा माटे नारद
इ ग्रामांतरथी त्यां आवी शुं बन्ने जण पोत पोता
मलीने बेठा. तेवा समये त्र शिष्यने भणावतां अ
शब्दनो छाग (बोकडा) नो हतो करवो एवो अर्थ
र्वतके कह्यो. त्यारे नारद बोल्या के, "गुरुये तो आ
पणने भणावतां अज शब्दनो अर्थ, त्रण वर्षनी व्रीहि
(डांगेर) कही छे, तो तमे अज शब्दनो अर्थ छा
केम कहो छो?" पर्वतके कह्युं, "हुं जे अर्थ कहुं छ

ते खरो छे, " एम पोत पोतामां विवाद करतां जे खो टो ठरे, तेनी जीज छेदी नांखवी, एवी प्रतिज्ञा करी. ते वखते पर्वतकनी माताये जाण्युं के, आ नारद कहे छे, ते वात खरी छे. माटे हुं वसुराजानी पासे पुत्रभिक्षा मागी लेउं. कारण के, ये जण वसुराजा पासे साक्षी दाखल जवाना छे. एवुं विचारी वसुरा जा पासे जइने कालावाला कर्या. अनुक्रमे ते बन्ने जण वाद करतां वसुराजा पासे अर्थ पुछवा आव्या.

वसुराजाये पण मिश्र वचन बोलीने कर्युं के, "अज शब्दनो अर्थ बोकडो पण थाय छे ! अने जे दांतरे डांगेर पण थाय छे." एवुं सांभलतां ते ज व खते देवताये पाटु प्रहारे करी वसुराजाने सिंहास नथी नीचे पाडी नांख्यो ! यावत् ते विपत्ति पामी म रीने नरके गयो. पाछल पर्वतक पण आयुष्य पुर्ण करी नरके गयो अने नारद शील पाली सत्य वच नना प्रभावथी देवलोके गयो.

वांचनार सज्जनो ! वसुराजाये अज शब्दनो जे बोकडो अर्थ कर्यो, ते जो के, खरो हतो, तो पण हिंसाकारक वचन होवाथी सत्य वचन ते, असत्य भाय ठर्युं अने तेथी ज ते नरकने विषे गयो.

तथा पर्वतक अने वसुराजा ए बे नरकगामी छे." अनुक्रमे उपाध्याय आयुष्य पूर्ण करी देवलोके गया.

एकदा एक आहेडीए वनमां जइ कोइ मृगना ऊपर बाण नांख्युं, आगल जइने जोयुं तो, ठेकाणे स्फाटिकनी शिला दीठी, तेणे आवी राजाने कह्युं. राजाये तुरत ते शिला छानी मंगावी, पीठिका मंकावी ऊपर सिंहासन थापी पोते वेसवा मांड्युं. तेथी सर्व लोक एम जाणवा लाग्या के वसुराजा सत्य वचनना प्रभावथी अद्धर वेसे छे. तेथी सिमाडिया राजा प्रमुख सर्व लोक तेनी सेवा करवा लाग्या. एटलुं ज नहि पण ते वसुराजा महा प्रतिष्ठावान् सत्यवादी देव जाणे.

एकदा अवसरे पर्वतक मलवा मादे नारद कोई ग्रामांतरथी त्यां आव्यो. शास्त्रे जण पोत पोतामां मलीने वेठा. तेवा समये शिष्यने जणावतां अज शब्दनो छाग (बोकडा) नो होम करवो एवो अर्थ पर्वतके कह्यो. त्यारे नारद बोल्यो के, "गुरुये तो आपणने जणावतां अज शब्दनो अर्थ, त्रण वर्षनी त्रीहि (कांगेर) कही छे, तो तमे अज शब्दनो अर्थ छाग केम कहो छो?" पर्वतके कह्युं, "हुं जे अर्थ कहुं छुं,

ते खरो छे, " एम पोत पोतामां विवाद करतां जे खो टो ठरे, तेनी जीज छेदी नांखवी, एवी प्रतिज्ञा करी. ते वखते पर्वतकनी माताये जाण्युं के, आ नारद कहे छे, ते वात खरी छे. माटे हुं वसुराजानी पासे पुत्रभिक्षा मागी लेउं. कारण के, वे जण वसुराजा पासे साक्षी दाखल जवाना छे. एवुं विचारी वसुरा जा पासे जइने कालावाला कर्या. अनुक्रमे ते बन्ने जण वाद करतां वसुराजा पासे अर्थ पुछवा आव्या.

वसुराजाये पण मिश्र वचन बोलीने कह्युं के, "अज शब्दनो अर्थ बोकडो पण थाय छे ! अने ने दांतरे मांगेर पण थाय छे." एवुं सांभळतां ते ज व खते देवताये पाटु प्रहारे करी वसुराजाने सिंहास नथी नीचे पाडी नांख्यो ! यावत् ते विपत्ति पामी म रीने नरके गयो. पाछळ पर्वतक पण आयुष्य पूर्ण करी नरके गयो अने नारद शील पाली सत्य वच नना प्रभावथी देवलोके गयो.

वांचनार सज्जनो ! वसुराजाये अज शब्दनो जे बोकडो अर्थ कर्यो, ते जो के, खरो हतो, तो पण हिंसाकारक वचन होवाथी सत्य वचन ते, असत्य प्राय ठर्युं अने तेथी ज ते नरकने विषे गयो.

तथा पर्वतक अने वसुराजा ए वे नरकगामी छे." अ
नुक्रमे उपाध्याय आयुष्य पूर्ण करी देवलोके गया

एकदा एक आहेडीए वनमां जइ कोइ मृगन
ऊपर बाण नांख्युं, आगल जइने जोयुं तो, मृग
ठेकाणे स्फाटिकनी शिला दीठी, तेणे आवी रा
ने कह्युं. राजाये तुरत ते शिला छानी मंगाव
पीठिका मंगावी ऊपर सिंहासन थापी पोते बे
वा मांड्युं. तेथी सर्व लोक एम जाणवा लाग्या
वसुराजा सत्य वचनना प्रभावथी अद्धर बेसे
तेथी सिमाडिया राजा प्रमुख सर्व लोक तेनी से
करवा लाग्या. एटलुं ज नहि पण ते वसुराजा म
प्रतिष्ठावान् सत्यवादी कहेवाणो.

एकदा अवसरे पर्वतने मलवा माटे नारद
ई ग्रामांतरथी त्यां आव्यो. बन्ने जण पोत पोता
मलीने बेठा. तेवा समये शिष्यने भणावतां अ
शब्दनो छाग (बोकडो) नो होम करवो एवो अर्थ
र्वतके कह्यो. त्यारे नारद बोल्यो के, "गुरुये तो आ
पणने भणावतां अज शब्दनो अर्थ, त्रण वर्षनी व्री
(डांगेर) कही छे, तो तमे अज शब्दनो अर्थ छा
केम कहो छो?" पर्वतके कह्युं, "हुं जे अर्थ कहुं छुं

खरो छे, " एम पोत पोतामां विवाद करतां जे खो
ठरे, तेनी जीभ छेदी नांखवी, एवी प्रतिज्ञा करी.
वखते पर्वतकनी माताये जाण्युं के, आ नारद
हे छे, ते वात खरी छे. माटे हुं वसुराजानी पासे
ाजिक्षा मागी लेउं. कारण के, वे जण वसुराजा
से साक्षी दाखल जवाना छे. एवुं विचारी वसुरा
। पासे जइने कालावाला कर्या. अनुक्रमे ते वन्ने
य वाद करतां वसुराजा पासे अर्थ पुछवा आव्या.
वसुराजाये पण मिश्र वचन बोलीने कह्युं के,
अज शब्दनो अर्थ बोकडो पण थाय छे । अने ते
तरे कांगेर पण थाय छे." एवुं सांभळतां ते ज घ
ते देवताये पादु प्रहारे करी वसुराजाने सिंहास
ी नीचे पाडी नांख्यो । यावत् ते विपत्ति पामी म
ने नरके गयो. पाछळ पर्वतक पण आयुष्य पूर्ण
ी नरके गयो अने नारद शील पाळी सत्य वच
ा प्रभावथी देवलोके गयो.

वांचनार सज्जनो ! वसुराजाये अज शब्दनो जे
कडो अर्थ कर्यो, ते जो के, खरो हतो, तो पण
साकारक वचन होवाथी सत्य वचन ते, असत्य
य ठर्युं अने तेथी ज ते नरकने विषे गयो.

तथा पर्वतक अने वसुराजा ए बे नरकगामी छे." ए
नुक्रमे उपाध्याय आयुष्य पूर्ण करी देवलोके गय
एकदा एक आहेडीए वनमां जइ कोइ मृग
ऊपर बाण नांख्युं. आगल जइने जोयुं तो, मृग
ठेकाणे स्फाटिकनी शिला दीठी, तेणे आवी रा
ने कह्युं. राजाये तुरत ते शिला छानी मंगा
पीठिका मंगावी ऊपर सिंहासन थापी पोते बे
वा मांड्युं. तेथी सर्व लोक एम जाणवा लाग्या
वसुराजा सत्य वचनना प्रभावथी अद्धर बेसे
तेथी सिमाडिया राजा प्रमुख सर्व लोक तेनी से
करवा लाग्या. एटलुं ज नहि पण ते वसुराजा म
प्रतिष्ठावान् सत्यवादी [illegible] वाणो.
एकदा अवसरे पर्वत [illegible] मलवा माटे नारद
ई ग्रामांतरथी त्यां आवे [illegible] त्रणे जण पोत पोता
मलीने बेठा. तेवा समये [illegible] ष्यने जणावतां अ
शब्दनो छाग (बोकडा) नो [illegible] करवो एवो अर्थ
र्वतके कह्यो. त्यारे नारद [illegible] के, "गुरुये तो अ
णने जणावतां अज शब्दनो अर्थ, त्रण वर्षनी त्री
(सांगेर) कही छे, तो तमे अज शब्दनो अर्थ छा
केम कहो छो?" पर्वतके कह्युं, "हुं जे अर्थ कहुं

ते खरो छे," एम पोत पोतामां विवाद करतां जे खो टो ठरे, तेनी जीभ छेदी नांखवी, एवी प्रतिज्ञा करी. ते वखते पर्वतकनी माताये जाण्युं के, आ नारद कहे छे, ते वात खरी छे. माटे हुं वसुराजानी पासे पुत्रभिक्षा मागी लेउं. कारण के, ते जण वसुराजा पासे साक्षी दाखल जवाना छे. एवुं विचारी वसुरा जा पासे जइने कालावाला कर्या. अनुक्रमे ते बन्ने जण वाद करतां वसुराजा पासे अर्थ पूछवा आव्या.

वसुराजाये पण मिश्र वचन बोलीने कह्युं के, "अज शब्दनो अर्थ बोकडो पण थाय छे ! अने ते डांगरे कांगर पण थाय छे." एवुं सांभळतां ते ज व खते देवताये पाटु प्रहारे करी वसुराजाने सिंहास नथी नीचे पाडी नांख्यो ! यावत् ते विपत्ति पामी म रीने नरके गयो. पाछळ पर्वतक पण आयुष्य पूर्ण करी नरके गयो अने नारद जीव पाळी साप रच नना प्रभावथी देवलोके गयो.

वांचनार सज्जनो ! वसुराजाये अज शब्दनो जे बोकडो अर्थ कर्यो, ते जो के, खरो हतो, तो पण हिंसाकारक वचन होवाथी सत्य वचन ते, असत्य प्राय थयुं अने तेथी ज ते नरकने विषे गयो.

म्माव सभा के०) सौधर्मा सभा जेम (सेठा के०) श्रेष्ठ छे, तथा (सव्वधम्मा के०) सर्व धर्मोने विषे (जह के०) जेम (णिवाण के०) मोक्षधर्म (सेठा के०) श्रेष्ठ छे; तेम (णायपुत्ता के०) ज्ञातपुत्र श्री महावीर देव थकी, कोइ (परम के०) उत्कृष्ट (ना णी के०) ज्ञानी (ण अत्थि के०) नथी. अर्थात् स्थितिमां लवसत्तम देवोथी, सभाउमां सौधर्म सभाथी अने धर्ममां मोक्षधर्मथी कोइ श्रेष्ठ नथी; तेम ज्ञातपुत्र श्री महावीर देवथी पण कोइ उत्कृष्ट ज्ञानी नथी.॥ २४ ॥

जावार्थः—स्थितिवाला लोकोमां जेम लवसत्तम देवो एटले पांच अनुत्तर विमानवासी देवो, (इहां पांच अनुत्तर विमानवासी देवोनुं लवसत्तम नाम, ए उपरथी पड्युं छे के, जो कदि तेउनुं मनुष्यजवमां पोताना आयुष्य करतां, सात लव आयुष्य वधारे होत, तो जरूर तेउ सिद्धगति पामत। तेथी) सर्वोत्कृष्ट स्थितिवाला छे, तथा सर्व सजाउने विषे घणां क्रीडा करवानां स्थानक विगेरे होवाथी, जेम सौधर्मा सभा श्रेष्ठ छे अने सर्व धर्मोने विषे, (सर्व दर्शनियो पण पोत पोताना धर्मने विषे मोक्षने उत्तम गणे छे, तेथी) मोक्षधर्म जेम श्रेष्ठ छे; तेम ज्ञातपुत्र श्री महावीर

वली श्री दशवैकालिक सूत्रना सवाक्यशुद्धि न
मे सातमा अध्ययनमां कह्युं छे के–

तहेव काणं काणित्ति, पंडगं पंडगंति वा ॥
वाहियं वावि रोगित्ति, तेणं चोरेत्ति नो वए ॥ १

तेमज काणाने काणो, नपुंसकने नपुंसक, रोगि
याने रोगियो अने चोरने चोर न कहेवो. जो के,
चन सत्य छे, परंतु परने पीडाकारी होवाथी न बोलवुं
ए प्रकारे सत्य वाक्योने विषे जेम अनवद्य वचन
श्रेष्ठ छे, तथा तपने विषे जेम नववाड सहित ब्रह्मच
र्यने श्रेष्ठ कह्युं छे, तेम लोकने विषे रूप, संपदा, अ
तिशय, क्षायक समकित, ज्ञान, दर्शन अने चारित्र
करी श्रमण जगवंत श्री महावीर देव उत्तम जाणवा

ठिईण सेठा लवसत्तमावा,
सजा सुहम्माव सजाण सेठा ॥
णिव्वाण सेठा जह सव्वधम्मा,
ण णायपुत्ता परम ऽत्थि नाणी ॥ २४ ॥

अर्थः–(ठिईण के०)स्थितिवाळा लोकोमां (लव
सत्तमावा के०) लवसत्तम देवो जेम (सेठा के०)
श्रेष्ठ छे, तथा (सजाण के०) सर्वे सजाउंमां (सुह

व सजा के०) सौधर्मा सजा जेम (सेठा के०)
 ठे, तथा (सव्वधम्मा के०) सर्व धर्मोने विषे
 ह के०) जेम (णिव्वाण के०) मोक्षधर्म (सेठा
) श्रेष्ठ ठे; तेम (णायपुत्ता के०) ज्ञातपुत्र श्री
 ावीर देव थकी, कोइ (परम के०) उत्कृष्ट (ना
 के०) ज्ञानी (ण अत्थि के०) नथी. अर्थात् स्थि
 मां लवसत्तम देवोथी, सजाउंमां सौधर्म सजाथी श्र
 र्मोमां मोक्षधर्मथी कोइ श्रेष्ठ नथी; तेम ज्ञातपुत्र श्री
 ावीर देवथी पण कोइ उत्कृष्ट ज्ञानी नथी. ॥ २४ ॥
 ावार्थः–स्थितिवाला लोकोमां जेम लवसत्तम दे
 एटले पांच अनुत्तर विमानवासी देवो, (इहां पां
 अनुत्तर विमानवासी देवोनुं लवसत्तम नाम, ए
 रथी पड्युं ठे के, जो कदि तेउंनुं मनुष्यजवमां पो
 ना आयुष्य करतां, सात लव आयुष्य वधारे हो
 तो जरूर तेउं सिद्धगति पामत। तेथी) सर्वोत्कृष्ट
 यतिवाला ठे, तथा सर्व सजाउंने विषे घणां क्रीडा
 वानां स्थानक विगेरे होवाथी, जेम सौधर्मा सजा
 ठ ठे अने सर्व धर्मोने विषे, (सर्व दर्शनियो पण
 त पोताना धर्मने विषे मोक्षने उत्तम गणे ठे, तेथी)
 क्षधर्म जेम श्रेष्ठ ठे; तेम ज्ञातपुत्र श्री महावीर

देवथी कोइ उत्कृष्ट ज्ञानी नथी. अर्थात् स्थितिव
ला लोकोमां लवसत्तम देवोथी, सन्नाओमां सौधर्म
सन्नाथी अने सर्वे धर्मोमां मोक्षधर्मथी जेम कोइ
ष्ट नथी, तेम ज्ञातपुत्र श्री वर्द्धमानस्वामीथी को
पण उत्कृष्ट ज्ञानी नथी. ॥ २४ ॥

पुढोवमे धुणइ विगयगेहि,
न सन्निहिं कुवइ आसुपन्ने ॥
तरितुं समुद्दं च महाजवोघं,
अनयंकरे वीर अणंतचक्खु ॥ २५ ॥

अर्थः—जेम पृथ्वी सकल वस्तुने आधारजूत, ते
जगवंत पण (पुढोवमे के०) पृथ्वी समान तथा श
ठ प्रकारनां कर्मोने (धुणइ के०) दूर कर्यां ठे
मणे एवा, तथा (विगयगेहि के०) बाह्य अने श
ज्यंतर वस्तुमांथी गयो ठे अजिलाप ते जेमनो एव
तथा (सणिहिं के०) संनिधिने (न कुवइ के०) न क
नारा, तथा (आसुपन्ने के०) उतावली प्रज्ञावा
(च के०) वली (महाजवोघं के०) चार गति रूप
होटा (समुद्दं के०) समुद्रने (तरितुं के०) तरीने
र्वाणपदने पाम्या ठे एवा, तथा (अजयंकरे के०) श

ःयना करनार तथा (वीर के०) शूरवीर अने (अ
ःंतचरकु के०) अनंत चक्षुवाला श्रीमहावीर देव छे.
ः भावार्थः—जेम पृथ्वी सकल वस्तुने आधारभूत,
था सर्व वस्तुने सहन करनार छे, तेम भगवंत प
I सर्व प्राणियोने अजयदानथी तथा सदुपदेश दे
ाथी प्राणिमात्रने आधारभूत अथवा सर्व परिसह
पसर्गने सहन करवाथी पृथ्वी समान तथा आठ
कारनां कर्मोने दूर कर्यां छे जेमणे एवा, तथा बा
य अने आभ्यंतर वस्तुमांथी गयो छे अभिलाप ते
ेमनो एवा, तथा द्रव्य संनिधि ते धन, धान्य,
द्विपद तथा चतुष्पद अने भाव संनिधि ते क्रोध,
मान, माया अने लोभ ए रीते बे प्रकारनी संनिधि
ने न करनार तथा उतावली प्रज्ञावान्, तथा चार
ाति रूप घणा दुःखे करी भरपूर एवा भवना उंघ
... समूह रूप संसार समुद्रने तरीने निर्वाण
ामदने पाम्या छे एवा, तथा प्राणियोने सदुपदेश
आपवाथी पोताने अने परने अजयना करनार, तथा
अष्ट प्रकारनां कर्मोने विशेष प्रकारे प्रेरी प्रेरीने क्षय
करयां छे जेमणे तेथी वीर अने अनंतचक्षुवाला एट
ले केवलज्ञानी एवा श्री महावीर देव छे. ॥ २५

किरियाकिरियं वेणइयाणुवायं,
अन्नाणियाणं पडियच्च ठाणं ॥
से सववायं इतिवेयइत्ता,
सर्वं प्राणिरधम्म सदीहरायं ॥ २७ ॥

थी प्राणिमात्रने किरियं के०) क्रियावादी अने अ
असर्गने सहन करवार्थंय के०) विनयवादी, तथा
लरनां कर्मोने दूर कऽअज्ञानवादी, ए सर्व पाखंमि
अने आभ्यंतर वस्तु के०) अनुवाद एटले भेद
मनो एवा, तथा ऽऌरे दर्शनियोना (ठाणं के०)
पद तथा चतुष्पद के०) जाणीने (से के०) ते
न, माया अने (सववायं के०) सर्व वादने (इ
...ए प्रकारे जाणीने (धम्म के०)
रित्र रूप धर्मने विषे (सदीहरायं के०) दीर्घ रात्रि
हित (उवठिए के०) सावधानपणे रह्या. ॥ २७ ॥
भावार्थः-क्रियावादीना एकशोने एंशी, अक्रिया
दीना चोराशी, विनयवादीना बत्रीश अने अज्ञान
दीना सडशठ, ए सर्वे मलीने त्रणशेने तेशठ भेद
या. ते पाखंमि दर्शनियोना भेद जाणवा. ए प्रका
ए चारे दर्शनियोना स्थानकने एटले अंगी

करेला पद्मने अथवा दर्शन स्वरूपने सम्य
(दुर्गति जवानां कारण) जाणीने, ते श्री
देव सर्व वादने ए प्रकारे जाणीने अर्थात
नो त्याग करीने,चारित्ररूप धर्मने ि ी
हितअर्थात् जावज्जीव सूधी सावधानपणे र

से वारिया इत्थि सराइभत्तं,
उवहाणवं छुक्खखयठयाए ॥
लोगं विदित्ता आरं पारं च,
सव्वं पभू वारिय सव्ववारं ॥ २८ ॥

अर्थः-(से के०) ते जगवंत (सराइभत्तं
त्रिनोजन सहित (इत्थि के०) स्त्रीने (वारि
निवारण करीने (छुक्खखयठयाए के०) अष्ट
प छुःखने क्षय करवाने अर्थे (उवहाणवं के
धानवान थया. वली (पभू के०) ते प्रभु
वीर देवे (आरं लोगं के०) आलोक(च के०)
रं के०) परलोकने (विदित्ता के०) जाणी
के०) सर्व प्रकारनां पापनां स्थानकोने (सव्व
घणी वार (वारिय के०) निवारण कर्यां.
जावार्थः-ते जगवंत रात्रिनोजन सहित

ून) उपलक्षणथी प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्ता
ान अने परिग्रहने पण निवारण करीने, अष्ट कर्म
रूप दुःखनो क्षय करवाने अर्थे उपधानवान् अर्था
त् तपश्चर्यावडे सूकवी नांख्यो छे देह ते जेमणे ए
ा थया. वली ते प्रनु श्री महावीर देवे आलोक ते
नुष्यलोक अने परलोक ते नरकादिक, तेना सरू
ने जाणीने, सर्व प्रकारनां पापनां स्थानकोने घणी
र निवारण कर्यां. अर्थात् नगवंते पोते प्राणाति
ातादिकनो निषेध कर्यो अने बीजार्जने पण ते
ाणातिपातादिक दुर्गति जवानां कारण छे; एम
ेशावी तेथी विरक्त कर्या. ॥ २० ॥

हवे सुधर्मस्वामीए श्री महावीरदेवना गुणोने वर्णवीने
ोताना शिष्य जंबूस्वामीने आ प्रकारे कह्युं.

सोच्चा य धम्मं अरिहंतनासियं,
समाहियं अछपदविसुद्धं ॥
तं सद्दहंता य जणा अणाऊ,
इंदाव देवाहिवागमिस्संति त्तिबेमि ॥ २ए ॥

अर्थः-हे जंबू ! (समाहियं के०) सम्यक् प्रकारे
(अछपदविसुद्धं के०) अर्थ अने पद वडे शुद्ध

ुन) उपलक्षणथी प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्ता
ान अने परिग्रहने पण निवारण करीने, अष्ट कर्म
प दुःखनो क्षय करवाने अर्थे उपधानवान् अर्था
तपश्चर्यावडे सूकवी नांख्यो छे देह ते जेमणे ए
थया. वली ते प्रभु श्री महावीर देवे आलोक ते
नुष्यलोक अने परलोक ते नरकादिक, तेना स्वरू
जाणीने, सर्व प्रकारनां पापनां स्थानकोने पणी
र निवारण कर्यां. अर्थात् भगवंते पोते प्राणाति
ातादिकनो निषेध कर्यो अने बीजाओने पण ते
ाणातिपातादिक दुर्गति जवानां कारण छे; एम
ाशांवी तेथी विरक्त कर्या. ॥ २८ ॥

हवे सुधर्मस्वामीए श्री महावीरदेवना गुणो
ोताना शिष्य जंबूस्वामीने आ प्रकारे

मह सोच्चा य धम्मं अरिहंतभासियं, मग्गं,
(ि समाहियं अट्ठपदोवसुद्धं य सारं,
ह तं सद्दहंता य जणा अणाउ दारं ॥ २ ॥
इंदाव देवाहिवागमिस्संति पूइयं, मग्गं ॥

अर्थः—हे जंबू ! (समाहियं
(अट्ठपदोवसुद्धं के०) ए

ाळ, तेथी पण प्रधान मंगल; डुर्धर्षे एटले जेनो परा
ा न करी शकाय एवा गुणोनो एकनो एक ज नायक
ते मोक्षमार्गमां जे सम्यक्दर्शन विगेरे तेने विषे
ाट समान एवुं शीयल व्रत छे. ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

हवे ते शीयल पालवानुं माहात्म्य कहे छे.

(अनुष्टुब्वृत्तम्.)

देव दाणव गंधव्वा, जक्ख रक्खस किन्नरा ॥
बंभयारिं नमंसंति, डुकरं जे करिंति ते ॥ ४ ॥

जे पुरुष डुष्कर एवुं ब्रह्मचर्य व्रत पाले छे, तेने वि
ानवासी देवताओ, ज्योतिषी देवताओ, भुवनपति देव
ाओ, देवताना गवैया गांधर्व देवताओ, वृक्षमां रहेनारा
क्षो, मांस खावामां तत्पर एवा राक्षसो अने व्यंतर जा
ाना किन्नर देवताओ; ए सर्व नमस्कार करे छे. ॥ ४ ॥

एस धम्मे धुवे णियए,
सासए जिणदेसिए ॥
सिज्झा सिज्झंति चाणेणं,
सिज्झिस्संति तहावरे त्ति बेमि ॥ ५ ॥

आ ब्रह्मचर्य लक्षण एवो शीलधर्म, ते ध्रुव एटले
ाश्वल, परतीर्थियोए पण एनो निषेध नथी कर्यो

इत्थरिसं गुण नायक-मेकं,
मोक्खपदस्स-वडंसग नूयं ॥ ३ ॥

पंच महाव्रत नामे सुव्रतोनुं मूल, अथवा पंच मह
त पालनारा सारा मुनियोना नियमोनुं मूल, अथ
पंच महाव्रत अने अणुव्रतोनुं मूल; शुद्ध स्वभा
ला साधु मुनिराजोए सेवेलुं अने परस्पर विरोध
थवा वैरनुं उपशमन ए छे परिणाम जेनुं एवुं; स
समुद्रोमां म्होटो उदधि जे स्वयंभूरमण समुद्र, ते
पेठे दुःखे तरी शकाय एवा तीर्थ रूप, अथवा स
समुद्रोमां महोदधि रूप जे संसार, तेने तरवा
टे तीर्थ समान; तीर्थंकर देवोवडे सारी रीते उपदे
ला गुप्तियादिक मार्गने पालवानो उपाय, नरक अ
तिर्यंचनी गतिने रोकी छे जेणे एवुं; सार पदार्थोने
र्थे रीते पवित्र अने सारा कर्या छे जेणे एवुं;सिद्धग
अने वैमानिकपणानां उघाड्यां छे बारणां जेणे ए
देवेंद्रोये अने नरेंद्रो (चक्रवर्त्तियो) ए जेने नमस्
र कर्यो छे, तेवा पुरुषोने पण पूज्य; सर्व जगत्मां
त्तम मंगलोनो मार्ग अर्थात् मंगलकारी वस्तु मेलव
नो उपाय अथवा सर्व जगत्मां उत्तम मंगल एवुं

ंगल, तेची पण प्रधान मंगल; डुर्धर्ष एटले जेनो परा
भव न करी शकाय एवा गुणोनो एकनो एक ज नायक
अने मोक्षमार्गमां जे सम्यक्दर्शन विगेरे तेने विषे
मुगट समान एवुं शीयल व्रत छे. ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

हवे ते शीयल पाळवानुं माहात्म्य कहे छे.

(अनुष्टुब्वृत्तम्.)

देव दाणव गंधवा, जक्ख रक्खस किन्नरा ॥
बंभयारिं नमंसंति, डुक्करं जे करिंति ते ॥ ४ ॥

जे पुरुष डुष्कर एवुं ब्रह्मचर्य व्रत पाळे छे, तेने वि
मानवासी देवताओ, ज्योतिषी देवताओ, भुवनपति देव
ताओ, देवताना गवैया गांधर्व देवताओ, वृक्षमां रहेनारा
यक्षो, मांस खावामां तत्पर एवा राक्षसो अने व्यंतर जा
तिना किन्नर देवताओ; ए सर्वे नमस्कार करे छे. ॥ ४ ॥

एस धम्मे धुवे णियए,
सासए जिणदेसिए ॥
सिझा सिझंति चाणेणं,
सिझिस्संति तहावरे त्ति बेमि ॥ ५ ॥

आ ब्रह्मचर्य लक्षण एवो शीलधर्म, ते ध्रुव एटले
अचल, परतीर्थियोए पण एनो निषेध नथी कर्यो

दुरिसं गुण नायक–मेकं,
मोक्खपहस्स-वडंसग भूयं ॥ ३ ॥

पंच महाव्रत नामे सुव्रतोनुं मूल, अथवा
त पालनारा सारा मुनियोना नियमोनुं मूल,
पंच महाव्रत अने अणुव्रतोनुं मूल; शुद्ध स्वभा-
ला साधु मुनिराजोए सेवेलुं अने परस्पर विरोध
थवा वैरनुं उपशमन ए छे परिणाम जेनुं एवुं;
समुद्रोमां म्होटो उदधि जे स्वयंभूरमण समुद्र,
पेठे दुःखे तरी शकाय एवा तीर्थ रूप, अथवा
समुद्रोमां महोदधि रूप जे संसार, तेने तरवा
टे तीर्थ समान; तीर्थंकर देवोवडे सारी रीते उप
ला गुप्तियादिक मार्गने पाळवानो उपाय, नरक
तिर्यंचनी गतिने रोकी छे जेणे एवुं; सार पदार्थों
थे रीते पवित्र अने सारा कर्या छे जेणे एवुं;सिद्ध
अने वैमानिकपणानां उघाड्यां छे बारणां जेणे
देवेंद्रोये अने नरेंद्रो (चक्रवर्त्तियो) ए जेने नम
र कर्यो छे, तेवा पुरुषोने पण पूज्य; सर्व जगत्‌म
त्तम मंगळोनो मार्ग अर्थात् मंगलकारी वस्तु मेळ
नो उपाय अथवा सर्व जगत्‌मां उत्तम मंगल एवुं

एएहिं कारणेहिं,
तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥ ८ ॥

१ चार घातिकर्म खपावीने केवलज्ञान पामेला
रिहंत; २ आठ कर्मथी रहित थइने सिद्धगति
पामेला सिद्ध भगवंत; ३ प्रवचन एटले श्रुतज्ञान
यवा श्रुतज्ञानना उपयोगथी जुदो नहि होवाथी
; ४ धर्मोपदेश देनारा गुरु; ५ साठ वर्षनी वयवा
य स्थविर, समवायांग सूत्रने धारण करनारा
स्थविर अने वीस वर्षनी दीक्षापर्यायवाळा व
स्थविर, ए त्रण प्रकारना स्थविर; ६ एक बीजा
अपेक्षाये घणा ज्ञानवाळा अर्थात् एक बीजाथी
रे ज्ञानवान् एवा बहुश्रुत; ७ तपस्वी एटले अन
ादिक विचित्र प्रकारना तपे करी युक्त एवा सा
य साधुओ; ए रीते जगत्ने वंदनीक एवा जे अ
ादिक, तेमनी निरंतर ज्ञानोपयोग होवे; ८ पा
ा करवी एटले तेमना उपर अनुराग करवो,
त्नुं यथावस्थित गुण कीर्त्तन करवुं; तथा ९ ए
नकित; १० ज्ञानादिकनो विनय; ११ आ
संयमना व्यापारथी निरतर थपकी अ

माटे प्रमाणवडे प्रतिष्ठित, त्रिकालमां पण एनो पामवानो नथी माटे नित्य, त्रणे कालमां ००६० होवाथी शाश्वत अने तीर्थंकरोए प्रकाशेलो . छे. आवा शीलधर्मे करीने पूर्वे घणा जीवो सिद्धि ने पाम्या छे, वर्त्तमान कालमां पामे छे अने आ० क काले पण पामशे. ए प्रकारे हे जंबू! हुं तने कहुं प्रसंगे तीर्थंकर नामकर्म बांधवानां वी. . ० ००००

(आर्यावृत्तम्.)

अरिहंत सिद्ध पवयण,
गुरु थेर बहुस्सुए तवस्सीसु ॥
वच्छलया य तेसिं,
अभिक्ख नाणोवओगे य ॥ ६ ॥
दंसण विणय आव–
स्सए य सीलवये निरइयारे ॥
खणलव तव च्चियाए,
वेयावच्चे समाहीए ॥ ७ ॥
अपुव्व नाणग्गहणे,
सुयभत्ती पवयणे पभावणया ॥

एएहिं कारणेहिं,
तिब्ययरत्तं लहइ जीवो ॥ ८ ॥

१ चार घातिकर्म खपावीने केवलज्ञान पामेला
रहंत; २ आठ कर्मथी रहित थइने सिद्धगति
पामेला सिद्ध भगवंत; ३ प्रवचन एटले श्रुतज्ञान
यवा श्रुतज्ञानना उपयोगथी जूदो नहि होवाथी
; ४ धर्मोपदेश देनारा गुरु; ५ साठ वर्षनी वयवा
वय स्थविर, समवायांग सूत्रने धारण करनारा
र स्थविर अने वीश वर्षनी दीक्षापर्यायवाला प
य स्थविर, ए त्रण प्रकारना स्थविर; ६ एक बीजा
अपेक्षाये घणा ज्ञानवाला अर्थात् एक बीजाथी
रे ज्ञानवान् एवा बहुश्रुत; ७ तपस्वी एटले अन
ादिक विचित्र प्रकारना तपे करी युक्त एवा सा
य साधुओ; ए रीते जगत्‌ने वंदनीक एवा जे अ
तादिक, तेमनी निरंतर ज्ञानोपयोग छते; ८ वा
मता करवी एटले तेमना ऊपर अनुराग करवो,
तेमनुं यथावस्थित गुण कीर्त्तन करवुं; तथा ए
न ते समकित; १० ज्ञानादिकनो विनय; ११ आ
क एटले संयमना व्यापारथी निष्पन्न थएली अ

वश्य करणी; १२ व्रत एटले मूलगुण अने शील
ते उत्तरगुण, ए रीते ए दर्शनादिक चार बोलने
पे निरतिचारपणे वर्त्तवुं; १३ काल ते उपलक्षण
एवुं क्षणलवादि ग्रहण, तेमां क्षणलव कालने
.संवेगभावना भाववी,तथा ध्यान धरवुं; १४ उपवा
दिक तप करवो; १५ त्याग ते मुनिने उचित
देवुं; १६ दश प्रकारे वैयावृत्य करवी; १७ समाधि
टले गुरुआदिकनुं काम करवामां चित्तने सं
उत्पन्न करवो; १८ अपूर्वज्ञान ग्रहण करवुं; १९
ज्ञाननी भक्ति तथा बहुमान करवुं;अने २० ५
जैनमार्गनी देशना देइने प्रवचननी प्रभावना
ए प्रकारनां वीश कारणे करी एटले वीश
वारंवार सेवन करवाथी जीव तीर्थंकर न
धे छे. अर्थात् तीर्थंकरपणुं पामे छे. ॥ ६ ॥ ७ ॥

हवे जिनवचन पालवानुं फल कहे छे.

जिणवयणे अणुरत्ता,
जिणवयणं जे करंति भावेणं ॥
अमला असंकिलिठा,
ते हुंति परित्तसंसारी ॥ ए ॥

अरिहंत जगवंतना वचनने विषे अनुरक्त थइ, वचनने मन, वचन अने कायाए करी आराधन रनारा; मिथ्यात्व रूप मल, मोह, मछर अने क्लेश करी रहित एवा जीवो परित्तसंसारी थाय छे ए छे संसारने छेदीने मोक्षगतिने पामे छे. ॥ ए ॥

(अनुष्टुब्वृत्तम्.)

वं खु नाणिणो सारं, जं न हिंसइ किंचणं ॥
अहिंसा समयं चेव, एतावत्तं वियाणिया ॥ १० ॥

ए प्रकारे ज्ञानी एटले विशिष्ट विवेकवान पुरुष ा उपदेशनो सार ए ज छे के, ज्ञानवान् पुरुष त्र अने स्थावर प्राणियोने हणे नहीं, उपलक्षणथी षावाद बोले नहीं, चोरी करे नहीं, अब्रह्म सेवे नहीं, रिग्रह राखे नहीं अने रात्रिजोजन पण करे नहीं. वली वें कहेली अहिंसावडे समता आवे, तेथी एम जाणे , जेम मने मरण अलखामणुं लागे, तेम बीजा ीवोने पण तेवुं ज लागे. ए प्रकारे विचारीने ज्ञानी रुषे कोइ पण जीवने पीडा न उपजाववी. ॥ १० ॥

(काव्यम्.)

जाइं च वुड्ढिं च इह्ज पासं,
भूतेहिं जाणे पडिलेह सायं ॥

वश्य करणी; १२ व्रत एटले मूलगुण अने शील ले उत्तरगुण, ए रीते ए दर्शनादिक चार बोलने ये निरतिचारपणे वर्त्तवुं; १३ काल ते उपलक्षण एवुं क्षणलवादि ग्रहण, तेमां क्षणलव कालने .संवेगजावना जाववी,तथा ध्यान धरवुं; १४ ~ दिक तप करवो; १५ त्याग ते मुनिने उचित देवुं; १६ दश प्रकारे वैयावृत्त्य करवी; १७ समा टले गुरुआदिकनुं काम करवामां चित्तने उत्पन्न करवो; १८ अपूर्वज्ञान ग्रहण करवुं; १९ ज्ञाननी जक्ति तथा बहुमान करवुं;अने २० ५५ जैनमार्गनी देशना देइने प्रवचननी प्रजावना ए प्रकारनां वीश कारणे करी एटले वीश वारंवार सेवन करवाथी जीव तीर्थंकर . ः घे वे. अर्थात् तीर्थंकरपणुं पामे वे. ॥ ६ ॥ ७ ॥

हवे जिनवचन पालवानुं फल कहे वे.

जिणवयणे अणुरत्ता,
जिणवयणं जे करंति जावेणं ॥
अमला असंकिलिछा,
ते हुंति परित्तसंसारी ॥ ए ॥

अरिहंत जगवंतना वचनने विषे अनुरक्त थइ,
वचनने मन, वचन अने कायाए करी आराधन
करनारा; मिथ्यात्व रूप मल, मोह, मछर अने क्ले
ी करी रहित एवा जीवो परित्तसंसारी थाय छे ए
छे संसारने छेदीने मोक्षगतिने पामे छे. ॥ ए ॥

(अनुष्टुप्छन्दः.)

एवं खु नाणिणो सारं, जं न हिंसइ किंचणं ॥
अहिंसा समयं चेव, एतावत्तं वियाणिया॥१०॥

ए प्रकारे ज्ञानी एटले विशिष्ट विवेकवान पुरुष
ो उपदेशनो सार ए ज छे के, ज्ञानवान् पुरुष
अने स्थावर प्राणियोने हणे नही, उपलक्षणथी
पावाद बोले नही, चोरी करे नही, अब्रह्म सेवे नही,
रिग्रह राखे नही अने रात्रिभोजन पण करे नही. पछी
में कहेली अहिंसावडे समता आवे, तेथी एम जाणे
, जेम मने मरण अलखामणुं लागे, तेम बीजा
ोवोने पण तेवुं ज लागे. ए प्रकारे विचारीने ज्ञानी
रुपे कोइ पण जीवने पीडा न उपजाववी. ॥ १० ॥

(काव्यम्.)

जाइं च वुड्ढिं च इहऽज्ज पासं,
भूतेहिं जाणे पडिलेह सायं ॥

नि जोइने तुं जाग्रत था एटले बोध पाम अने जे
ातियादिक न थाय, तेम पोतानुं अने पारकुं एटले
द प्रकारना जीवोनी साथे तुं पोतानुं सुख सरखावी
ान कर. ते आवी रीते के, जेम तने सुख वहालुं अने
ख अळखामणुं लागे छे, तेम बीजा जीवोने पण तेम
लागे छे. ए प्रकारे विचारीने बीजा जीवोने पण तेम
उपजाववाथी पूर्वे कहेली जातियादिकने तुं नही
ामे. वली जेम तने इष्ट विषयो सुख अने अनिष्ट
िषयो दुःख आपे छे, तेम बीजा जीवोने पण ते
ज लागे छे. एम धारीने तुं कोइ पण जीवने पीडा
उपजावीश. पूर्वे कहेलां जाति शुद्धिनां दुःखने
वाथी अत्यंत विद्वान एटले तत्वज्ञानी पुरुषो, ते
त्कृष्ट एवुं मोक्ष अने ते पामवानो मार्ग ज्ञानादिक
एम जाणीने सम्यक्त्वदर्शी होवाथी पाप (सावद्य
नुष्ठान) करे नही. ॥ ११ ॥

उमुञ्च पास इह मच्चिएहिं,
आरंभजीवी उभयाणुपस्सी ॥
कामेसु गिद्धाणि चयं करंति,
संसिच्चमाणा पुणरेति गब्भं ॥ १२

तम्हातिविज्जो परमंतिणञ्चा,
सम्मत्तदंसी ए करेइ पावं ॥ ११ ॥

हे जीव ! जाति एटले जन्मावस्था, बाल्यावस्था, कुमारावस्था, योवनावस्था अने वृद्धावस्थामां जेनो अंत आवे, ते जाति, तथा वृद्धि एटले आलोकने विषे अथवा संसारने विषे जे कालक्षेप थाय ते वृद्धि; ए प्रकारनी जाति अने वृद्धिने तुं सूक्ष्मदृष्टिये करीने जो. वली जीवने जन्म पामतां तथा वृद्धावस्थामां शारीरिक अने मानसीक संबंधी जे डुःख थाय ठे, तेने पण हे जीव ! तुं विवेक रूप चक्षुवडे जो. कह्युं ठे के

जायमाणस्स जं दुख्खं, मरमाणस्स जंतुणो ॥
तेण दुख्खेण संतत्तो, न सरइ जाइ–मप्पणो ॥ १ ॥

जन्मता अने मरण पामता जीवने जे डुःख था य ठे, ते डुःखवडे पीडाएलो जीव, पठीथी पोतानी जातिने संजारतो नथी. अर्थात् पूर्वे जोगवेला डुः खने जूली जाय ठे ॥ १ ॥

अथवा जगवंत श्री महावीर देव, गौतमस्वामीने बोलावीने कहे ठे के, हे आर्य ! अहिं जाति अने वृ द्धि थवानुं कारण ते कर्म अने तेनुं कार्य जे डुःख

तेने जोइने तुं जाग्रत था एटले बोध पाम अने जेम जातियादिक न थाय, तेम पोतानुं अने पारकुं एटले चौद प्रकारना जीवोनी साथे तुं पोतानुं सुख सरखावी ने ज्ञान कर. ते आवी रीते के, जेम तने सुख वहालुं अने दुःख असखामणुं लागे छे, तेम बीजा जीवोने पण तेम ज लागे छे. ए प्रकारे विचारीने बीजा जीवोने अशाता न उपजाववाथी पूर्वे कहेली जातियादिकने तुं नहीं पामे. वली जेम तने इष्ट विषयो सुख अने अनिष्ट विषयो दुःख आपे छे, तेम बीजा जीवोने पण ते म ज लागे छे. एम धारीने तुं कोइ पण जीवने पीडा न उपजावीश. पूर्वे कहेलां जाति वृद्धिनां दुःखने देखवाथी अत्यंत विद्वान एटले तत्वज्ञानी पुरुषो, ते उत्कृष्ट एवुं मोक्ष अने ते पामवानो मार्ग ज्ञानादिक छे एम जाणीने सम्यक्त्वदर्शी होवाथी पाप (सावद्य अनुष्ठान) करे नहीं. ॥ ११ ॥

उमुच्च पास इह मच्चिएहिं,
आरंभजीवी उभयाणुपस्सी ॥
कामेसु गिद्धाणि चयं करंति,
संसिच्चमाणा पुणरेंति गब्भं ॥ १२ ॥

हे जीव! था लोकमां मनुष्योनी साथे द्रव्य
ाव नेदवडे जिन्न एवा स्नेहपासने तुं उत्कृष्टपणे
रीने दूर कर. कारण के, ते स्नेहपास कामजोग
ी इछावालो ठे, तेने सेवाने माटे एटले ते काम
ोग जोगवाने अर्थे जीव, हिंसादिक पापारंज करे
. एवो आरंज करनारो जीव आलोक तथा परलो
नुं सुख अथवा शारीरिक अने मानसिक ए वे प्रका
ला सुखने जोवानी इछावालो होय ठे. वली काम
टले विषयनी इछाउमां लुब्ध थएलो जीव, कर्मनो
चय करे ठे अने तेथी ज एटले कामोपादान जनि
कर्मवडे पूराएलो जीव, एक गर्जथी वीजा गर्ज
पामे ठे. अर्थात् अरहट्ट घट्टिकानी पेठे संसार
प चक्रवालने विषे परिज्रमण करे ठे. ॥ १२ ॥

(अनुष्टुब्वृत्तम्.)

वणे नाणे य विन्नाणे, पच्चक्खाणे य संजमे ॥
अणहनए तवे चेव, वोदाणे अकिरिआ सिद्धी

जगवंत श्री महावीरस्वामी प्रत्ये, गौतमस्वामीए
ह्युं के, हे जगवन्! साधु मुनिराजोनी सेवा कर
ाथी शुं फल थाय? त्यारे जगवंते कह्युं के, हे गौ

तस ! श्रवण एटले तेमनी वाणी सांभळवानुं फल थाय. तेथी शुं फळ थाय ? श्रुतज्ञान फल थाय. तेथी शुं फळ थाय ? श्रुतज्ञानमां हेय उपादेय रूप विज्ञान फळ थाय. तेथी शुं फळ थाय ? पापने त्याग करवा रूप पच्चक्खाण फल थाय. तेथी शुं फळ थाय ? संयम फळ थाय. तेथी शुं फळ थाय ? अनाश्रव एटले संयमी पुरुष नवां कर्म न ज बांधे; ते फळ थाय. तेथी शुं फल थाय ? तप फळ थाय. एटले जे अनाश्रवी होय ते हलुकर्मी होवाथी तप करनारा थाय. तेथी शुं फळ थाय ? जूनां कर्मने खपावनारुं निर्झरा फळ थाय. तेथी शुं फळ थाय ? योगनिरोध करवानुं फल थाय. तेथी शुं फळ थाय ? सर्व फळने विषे अंतर्गत रहेलुं एवुं मोक्ष फळ थाय. ॥ १३ ॥

(आर्यावृत्तम्.)

सारं दंसण नाणं,
सारं तव नियम संजमं सीलं ॥
सारं जिणवर धम्मं,
सारं संलेहणा मरणं ॥ १४ ॥

सामान्य उपयोग रूप दर्शन, विशेष उ

रूप ज्ञान, बाह्याभ्यंतर बार प्रकारे तप, सत्तर प्र
कारे संयम, नव प्रकारे ब्रह्मचर्यनी गुप्ति, जिनेश्वरनो
प्ररूपेलो धर्म अने संलेषणा मरण; ए ज सर्व जगत
ने विषे सार पदार्थ छे. ॥ १४ ॥

कल्लाणकोडि जणणी,
दुरंत दुरियारि वग्गणी ठवणी ॥
संसार जल हि तरणी,
एगं च होइ जीवदया ॥ १५ ॥

जीवदया कोटानकोटि कल्याणने प्रगट करना
री छे, दुरंत दुरितने नाश करनारा शत्रुनी
स्थानभूत छे अने संसार रूप समुद्रथी तारनारी
छे, इत्यादिक सर्व कार्य करनारी एक जीवदया
ज जाणवी. ॥ १५ ॥

आरंभे नत्थि दया,
महिला संगेण नासए बंभं ॥
संकाए सम्मत्तं,
पवज्जा अछ गहणेणं ॥ १६ ॥

आरंभमां दया होती नथी, स्त्रीनी संगत करवा
थी ब्रह्मचर्यनो नाश थाय छे, जिनवचनमां शंका रा

ख तेने समकित होतुं नथी अने धन ग्रहण क
तेने चारित्र होय नही. ॥ १६ ॥

मज्ज विसय कसाया,
निद्दा विकहा य पंचमी जणिया ॥
ए ए पंच पमाया,
जीवं पाडंति संसारे ॥ १७ ॥

मद्य, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा; ए पांच प्रकारना प्रमादो जीवने संसारमां पाडे ले. ॥ १७ ॥

(अनुष्टुब्वृत्तम्.)

लप्नंति विमला नोए, लप्नंति सुरसंपया ॥
लप्नंति पुत्त मित्तं च, एगो धम्मो न लप्नई १ए

विमल एवा जोग, देवतानी संपदा तथा पुत्र अने मित्र; ए सर्वे जीवथी मेलवी शकाय ले, परंतु जिनेश्व रनो प्ररूपेलो एक धर्म, ते मेलवी शकातो नथी. ॥१ए॥

एगो–हं नत्थि मे कोई, नाह–मन्नस्स कस्सई ॥
एवं अदीणमणसो, अप्पाण–मणुसासई ॥

हुं एक छुं, कोइ म्हारो नथी, तेम हुं पण कोइनो थी। एम अदीन मन थको एटले सावधान चित्तवा

लो थइने पोताना आत्माने शीखामण आपे. ॥ १९ ॥

एगो मे सासउ अप्पा, नाणदंसणसंजुउ ॥
सेसा मे बाहिरा जावा, सवे संजोग लरकणा ॥

ज्ञान दर्शने करी संयुक्त, सदा शाश्वत एटले नित्य अने रागादिक परजावथी रहित एवो म्हारो आत्मा, ते एक ज ठे अने शेष एटले बाकी रहेला ड्रव्य थकी तन, धन, कुटुंबादि संयोग मेलाप रूप अने जाव थकी विषय कषायादि रूप संयोग मेलाप एवा जाव; ते सर्वे म्हारा सरूपथी जूदा ठे ॥ २० ॥

(काव्यम्.)

नवि सुही देवता देवलोए,
नवि सुही पुढविपइ राया ॥
नवि सुही सेठ सेणावइणं,
एगंत सुही मुणि वीयरागी ॥२१॥

आ संसारमां देवलोकमां वसनारा देवता सुखी नथी, पृथ्वीनो पति राजा सुखी नथी, नगरशेठ अने सेनापति सुखी नथी; परंतु वीतरागी मुनि ज एकांते सुखी ठे. ॥ २१ ॥

(कलश.)

चौद पूरवधारि कहीए, ज्ञान चार वखाणीए
जिन नहीं पण जिन सरीखा, सुधर्मस्वामी जाणीए।
मात पिता कुल जाति निर्मल, रूप अनूप वखाणीए
देवताने वल्लभ एवा, जंबुस्वामी जाणीए ॥ १ ॥

अथ श्री दशवैकालिक सूत्रनुं पहेलुं, बीजुं
अने त्रीजुं तथा उत्तराध्ययन सूत्रनुं त्रीजुं
अने चोथुं; ए पांच अध्ययनो मूल
पाठ प्रारंभः

(अनुष्टुब्वृत्तम्.)

धम्मो मंगल-मुक्किठं, अहिंसा संजमो तवो ॥
देवावि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥
जहा डुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं ॥
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥
एमे ए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ॥
विहंगमाव पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥
वयं च वित्तिं लप्नामो, न य कोइ उवहम्मइ ॥
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥
महुकारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया ॥

...यश्ने पोताना आत्माने शीखामण आपे. ॥ १९ ॥

...ो मे सासउ अप्पा, नाणदंसणसंजुउ ॥
...सा मे बाहिरा नावा, सवे संजोग लरकणा ॥

ज्ञान दर्शने करी संयुक्त, सदा शाश्वत एटले नित्य अने रागादिक परनावथी रहित एवो म्हारो आत्मा, ते एक ज ठे अने शेष एटले बाकी रहेला ड्रव्य थकी तन, धन, कुटुंबादि संयोग मेलाप रूप अने नाव थकी विषय कषायादि रुप संयोग मेलाप एवा नाव; ते सर्वे म्हारा स्वरूपथी जूदा ठे ॥ २० ॥

(काव्यम्.)

नवि सुही देवता देवलोए,
नवि सुही पुढविपइ राया ॥
नवि सुही सेठ सेणावईणं,
एगंत सुही मुणि वीयरागी ॥२१॥

आ संसारमां देवलोकमां वसनारा देवता सुखी नथी, पृथ्वीनो पति राजा सुखी नथी, नगरशेठ ... ने सेनापति सुखी नथी; परंतु वीतरागी मुनि ... एकांत सुखी ठे. ॥ २१ ॥

थइने पोताना आत्माने शीखामण आपे. ॥ १९॥

गो मे सासउ अप्पा, नाणदंसणसंजुउ ॥
सा मे बाहिरा जावा, सवे संजोग लरकणा ॥

ज्ञान दर्शने करी संयुक्त, सदा शाश्वत एटले नित्य अने रागादिक परज्ञावथी रहित एवो म्हारो आत्मा, ते एक ज ठे अने शेष एटले बाकी रहेला ड्व्य थकी तन, धन, कुटुंबादि संयोग मेलाप रूप अने ज्ञाव थकी विषय कषायादि रूप संयोग मेला एवा ज्ञाव; ते सर्वे म्हारा स्वरूपथी जूदा ठे ॥ २०

(काव्यम्.)

नवि सुही देवता देवलोए,
नवि सुही पुढविपइ राया ॥
नवि सुही सेठ सेणावइणं,
एगंत सुही मुणि वीयरागी ॥२१॥

आ संसारमां देवलोकमां वसनारा देवता सु नथी, पृथ्वीनो पति राजा सुखी नथी, नगरशेठ ने सेनापति सुखी नथी; परंतु वीतरागी मुनि एकांत सुखी ठे. ॥ २१ ॥

तेगिछं पाहणा पाए, समारंजं च जोइणो ॥ ४ ॥
सिंज्जायर पिंमं च, श्रासंदी पलियंकए ॥
गिहंतर निसिज्जाए, गायस्सुवट्टणाणि य ॥ ५ ॥
गिहिणो वेयावडियं, जाइ श्राजीववत्तिया ॥
तत्ता-निवुड जोइत्तं, श्राउर स्सरणाणि य ॥ ६ ॥
मूलए सिंगवेरे य, उच्छु खंडे अनिवुडे ॥
कंदे मूले य सचित्ते, फले वीए य श्रामए ॥ ७ ॥
सोवच्चले सिंधवेलोणे, रोमालोणे य श्रामए ॥
सामुद्दे पंसुखारे य, कालालोणे य श्रामए ॥ ८ ॥
धूवणित्ति वमणे य, वत्थिकम्म विरेयणे ॥
श्रंजणे दंतवणे य, गायाजंग विजूसणे ॥ ९ ॥
सव-मेय-मणाइन्नं, निग्गंथाणं महेसिणं ॥
संजमंमि य जुत्ताणं, लहुजूय विहारिणं ॥ १० ॥
पंचासव परिन्नाया, तिगुत्ता छसु संजया ॥
पंच निग्गहणा धीरा, निग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥ ११ ॥
आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु श्रवाउडा ॥
एव पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
उ दता, धूयमोहा जिइंदिया ॥
परकंदे जलियंहीणठा, पक्कमंति महेसिणो ॥ १३ ॥
नेछंति वंतयं भोत्राणं, डुस्सहाइं सहित्तु य ॥

के इठ देवलोएसु, केइ सिझंति नीरया ॥ १४ ॥
खविता पुव कम्माइं, संजमेण तवेण य ॥
सिद्धिमग्ग–मणुपत्ता, ताइणो परिनिवुडे त्ति बेमि १५
इतिखुडगतिआयारकहा नामं तइयं अझयणं सम्मत्तं.

चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणीह जंतुणो ॥
माणुसत्तं सुई सद्धा, संजमंमि य वीरियं ॥ १ ॥
समावन्नाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु ॥
कम्मा नाणाविहा कट्टु, पुढो विस्संभया पया ॥ २ ॥
एगया देवलोएसु, नरएसुवि एगया ॥
एगया आसुरंकायं, अहाकम्मेहिं गच्छइ ॥ ३ ॥
एगया खत्तियो होइ, तओ चंडाल वोक्कसो ॥
तओ कीड पयंगो य, तओ कुंथु पिपीलिया ॥ ४ ॥
एव–मावट्टजोणीसु, पाणिणो कम्म किव्विसा ॥
न निविज्जंति संसारे, सवठेसुव खत्तिया ॥ ५ ॥
कम्मसंगेहिं संमूढा, दुक्खिया वहु वेयणा ॥
अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मंति पाणिणो ॥ ६ ॥
कम्माणं तु पहाणाए, आणुपुवी कयाइउ ॥
जीवा सोहि–मणुपत्ता, आययंति मणुस्सयं ॥ ७ ॥
माणुस्सं विग्गहं लद्धुं, सुई धम्मस्स दुल्लहा ॥

तेगिछं पाहणा पाए, समारंभं च जोइणो ॥ ४ ॥
सिंज्ञायर पिंडं च, आसंदी पलियंकए ॥
गिहंतर निसिज्जाए, गायस्सुवट्टणाणि य ॥ ५ ॥
गिहिणो वेयावडियं, जाइ आजीववत्तिया ॥
तत्ता–निब्बुड भोइत्तं, आउर स्सरणाणि य ॥ ६
मूलए सिंगवेरे य, उच्छु खंडे अनिब्बुडे ॥
कंदे मूले य सच्चित्ते, फले बीए य आमए ॥ ७ ॥
सोवच्चले सिंधवेलोणे, रोमालोणे य आमए ॥
सामुद्दे पंसुखारे य, कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
धूवणित्ति वमणे य, वत्थिकम्म विरेयणे ॥
अंजणे दंतवणे य, गायाभंग विभूसणे ॥ ९ ॥
सव्व–मेय–मणाइन्नं, निग्गंथाणं महेसिणं ॥
संजमंमि य जुत्ताणं, लहुभूय विहारिणं ॥ १० ॥
पंचासव परिन्नाया, तिगुत्ता छसु संजया ॥
पंच निग्गहणा धीरा, निग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥ ११
आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउडा ॥
एव पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया ॥ १२
उ दंता, धूयमोहा जिइंदिया ॥
परकंदे जवियंहीणठा, पक्कमंति महेसिणो ॥ १३ ॥
नेच्छंति वंतयं भोआणं, दुस्सहाइं सहित्तु य ॥

के इत्थ देवलोएसु, केइ सिज्झंति नीरया ॥ १४ ॥
खवित्ता पुव्व कम्माइं, संजमेण तवेण य ॥
सिद्धिमग्ग–मणुप्पत्ता,ताइणो परिनिव्वुडे त्ति बेमि १५
इतिखुडगनियंठिज्जं तइयं अज्झयणं सम्मत्तं.

चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणीह जंतुणो ॥
माणुसत्तं सुई सद्धा, संजमंमि य वीरियं ॥ १ ॥
समावन्नाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु ॥
कम्मा नाणाविहा कट्टु, पुढो विस्संभया पया ॥ २ ॥
एगया देवलोएसु, नरएसुवि एगया ॥
एगया आसुरंकायं, अहाकम्मेहिं गच्छइ ॥ ३ ॥
एगया खत्तियो होइ, तओ चंडाल बोक्कसो ॥
तओ कीड पयंगो य, तओ कुंथु पिपीलिया ॥ ४ ॥
एव–मावट्टजोणीसु, पाणिणो कम्म किव्विसा ॥
न निविज्जंति संसारे, सव्वट्ठेसुव खत्तिया ॥ ५ ॥
कम्मसंगेहिं संमूढा, दुक्खिया बहु वेयणा ॥
अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मंति पाणिणो ॥ ६ ॥
कम्माणं तु पहाणाए, आणुपुव्वी कयाइउ ॥
जीवा सोहि–मणुप्पत्ता, आययंति मणुस्सयं ॥ ७ ॥
माणुस्सं विग्गहं लद्धुं, सुइ धम्मस्स दुल्लहा ॥

जं सोच्चा पडिवज्जंति, तवं खंति-महिंसयं ॥ ८ ॥
आहच्च सवणं लद्धुं, सद्धा परम दुल्लहा ॥
सोच्चा नेयाउयं मग्गं, बहवे परिभस्सई ॥ ९ ॥
सुइं च लद्धुं सद्धं च, वीरियं पुण दुल्लहं ॥
बहवे रोयमाणावि, नो यणं पडिवज्जए ॥ १० ॥
माणुसत्तंमि आयाओ, जो धम्मं सोच्च सद्दहे ॥
तवस्सी वीरियं लद्धुं, संवुडे निद्धुणे रयं ॥ ११ ॥
सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई ॥
निवाणं परमं जाइ, घयं सित्तेव पावए ॥ १२ ॥
वीगिंच कम्मुणो हेउं, जसं संचिणु खंतिए ॥
पाढवं सरिरं हिच्चा, उड्ढं पक्कमइ दिसं ॥ १३ ॥
विसालसेहिं सीलेहिं, जक्खा उत्तर उत्तरा ॥
महासुक्काव दिप्पंता, मन्नंता अपुणच्चयं ॥ १४ ॥
अप्पिया देव कामाणं, कामरूव विउव्विणो ॥
उड्ढंकप्पेसु चिट्ठंति, पुव्वा वास सया बहू ॥ १५ ॥
तत्थ ठिच्चा जहा ठाणं, जक्खा आउक्खए चुया ॥
उवेंति माणुसं जोणिं, से दसंगेऽभिजायइ ॥ १६ ॥
खेत्तं वत्थु हिरन्नं च, पसवो दास पोरुसं ॥
चत्तारि कामखंधाणि, तत्थ से उववज्जए ॥ १७ ॥
मित्तवं नाइवं होइ, उच्चागोए य वन्नवं ॥

अप्पायंके महापन्ने, अजिजाये जसो बले ॥ १८ ॥
मुच्चा माणुस्सए जोए, अप्पडिरूवे अहाठयं ॥
पुवं विसुद्ध सद्धम्मे, केवलं बोहि बुज्झिया ॥ १९ ॥
चउरंगं डुल्लहं नच्चा, संजमं पडिवज्जिया ॥
तवसा धुय कम्मंसे, सिद्धे हवइ सासए–त्ति बेमि ॥
॥ इति चउरंगं नामं तइयं अज्झयणं सम्मत्तं. ॥

असंखयं जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ॥ एवं वियाणाहि जणे प्पमत्ते, किं नु विहिंसा अजया गहिंति ॥ १ ॥ जे पावकम्मेहिं धणं मणूसा, समाययंती अमयं गहा य ॥ पहाय ते पास पयट्ठिए नरे, वेराणुबद्धा नरयं उविंति ॥ २ ॥ तेणे जहा संधिमुहे गहीए, स कम्मुणा किच्चइ पावकारी ॥ एवं पया पेच्च इहं च लोए, कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ॥ ३ ॥संसार–मावन्न परस्स अट्ठा, साहारणं जं च करेइ कम्मं ॥ कम्मस्स ते तस्स उवेय काले, न बंधवा बंधवयं उविंति ॥ ४ ॥ वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते, इमंमि लोए अडुवा परत्था ॥ दीवप्पणट्ठेव अणंत मोहे, नेयाउयं दट्ठु–मदट्ठु–मेव ॥ ५ ॥ सुत्ते सुयावि पडिबुद्धजीवी,न वीससे पंडिय आसुपन्ने॥

घोरा मुहुत्ता अवलं सरीरं, जारंमपक्कीव चरे ऽप्पम
त्तो ॥ ६ ॥ चरे पयाइं परिसंकमाणो, जं किंचि पासं
इह मन्नमाणो ॥ लाभंतरे जीविय वूहइत्ता, पच्छा परि
न्नाय मलावधंसी ॥ ७ ॥ छंदं निरोहेण उवेइ मोक्खं,
आसे जहा सिक्खिय वम्मधारी ॥ पुव्वाइं वासाइं चरे
ऽप्पमत्तो, तम्हा मुणी खिप्प–मुवेइ मोक्खं ॥ ८ ॥ स
पुव्व–मेवं न लभेज्ज पच्छा, एसोवमा सासयवाइयाणं ॥
विसीयई सिढिले आउयंमि, कालोवणीए सरिरस्स
भेए ॥ ए ॥ खिप्पं न सक्केइ विवेग–मेउं, तम्हा समु
ठाय पहाय कामे ॥ समेच लोगं समया महेसी, अ
प्पाण रक्कीव चरे ऽप्पमत्तो ॥ १० ॥ मुहुं मुहुं मोहगु
णे जयंतं, अणेगरूवा समणं चरं तं ॥ फासा फुसंति
असमंजसं च, न तेसु भिक्खू मणसा पउसे ॥ ११ ॥
मंदाय फासा बहु लोहणिज्जा, तहप्पगारेसु मणं न
कुज्जा ॥ रक्खेज्ज कोहं विणएज्ज माणं, मायं न सेवे
ज्ज पहेज्ज लोहं ॥ १२ ॥ जे संखया तुच्छ परप्पवाई, ते
पेज्ज दोसाणुगया परज्झा ॥ ए ए अहम्मोति डुगं
छमाणो, कंखे गुणे जाव सरिरस्स भेउ त्ति बे मि
॥१३॥ इति असंखयं नामं चउत्थं अज्झयणं सम्मत्तं॥

॥ इति श्रीमहावीरस्तुति विगेरे समाप्तम् ॥